जूल्स वर्न कौन थे?

जेम्स बकले

चित्र: ग्रेगरी कोपलैंड

जूल्स वर्न कौन थे?

जेम्स बकले

चित्र : ग्रेगरी कोपलैंड

विषय-वस्तु

जूल्स वर्न कौन थे?
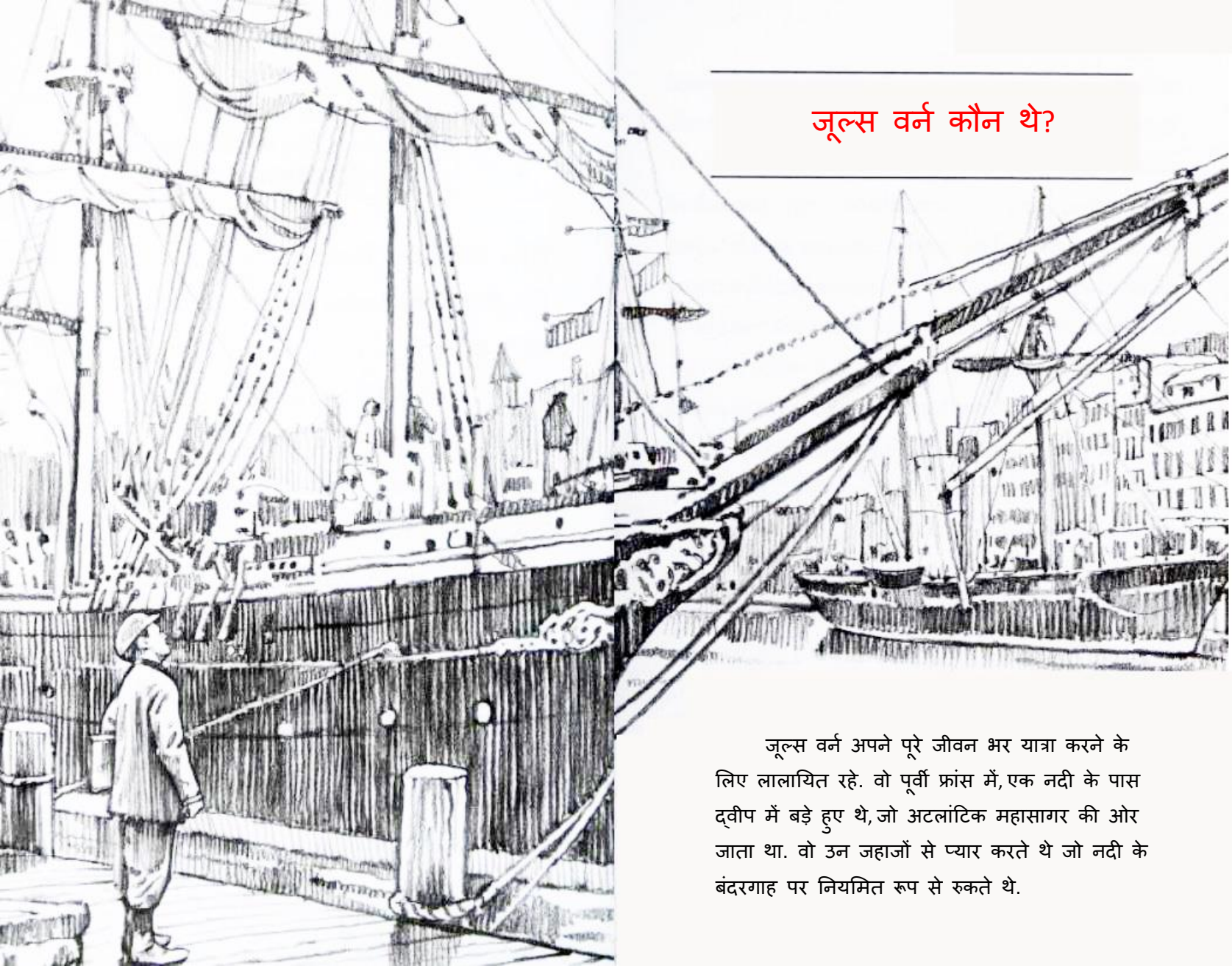
जूल्स वर्न अपने पूरे जीवन भर यात्रा करने के लिए लालायित रहे. वो पूर्वी फ्रांस में, एक नदी के पास द्वीप में बड़े हुए थे, जो अटलांटिक महासागर की ओर जाता था. वो उन जहाजों से प्यार करते थे जो नदी के बंदरगाह पर नियमित रूप से रुकते थे.

एक लड़के के रूप में, वो जहाज़ों के ऊंचे मस्तूलों को देखकर अचरज करते थे. और वे फ्रांस में विदेशों से लाए गए माल पर चकित थे : कोको, मसाले, चीनी, और आम जैसे विदेशी फल.

जब वे इकतीस वर्ष के थे, तब तक जूल्स ने कविता, नाटक और पत्रिकाओं में लेख लिखे. लेकिन वो एक किताब लिखना चाहते थे. वो एक ऐसी साहसिक कहानी लिखने का सपना देखते थे जो पाठकों को, उनके आसपास की दुनिया के बारे में उत्साहित करे.

उन्होंने दुनिया की कुछ अद्भुत स्थानों के बारे में पढ़ा था. उन्होंने ब्रिटिश महलों और रहस्यमय स्कॉटिश हाइलैंड्स के बारे में पढ़ा था. उन्होंने शूरवीरों और राजकुमारों के बारे में उपन्यास पढ़े थे. उन्होंने चार्ल्स डिकेंस की किताबें भी पढ़ी थीं जिनमें इंग्लैंड के जीवन का वर्णन किया गया था. अब वो आखिरकार उन जगहों को व्यक्तिगत रूप से देखने जा रहे थे. 1859 की गर्मियों में, जूल्स और उनका एक दोस्त, फ्रांस से यूनाइटेड किंगडम के द्वीपों के लिए रवाना हुए.

यह जोड़ी "हैम्बर्ग" नामक एक मालवाहक जहाज पर रवाना हुई. जैसे ही जहाज अटलांटिक के ठंडे पानी से गुज़रा, जूल्स बहुत खुश हुआ.

वो रात में तारों को देखने के लिए जागता था. दिन में, वह रेलिंग पर खड़ा रहता और भूमि के संकेतों के लिए आगे समुद्र को ताकता था. इंग्लैंड के लिवरपूल में पहुँचने के बाद दोनों दोस्तों ने स्कॉटलैंड के लिए एक ट्रेन पकड़ी. वहाँ जूल्स ऊंचे पहाड़ों, विशाल लुढ़कती घाटियों और धुंधली झीलों को देखकर दंग रह गए. जूल्स ने रहस्यमय - भूमध्य रेखा के उत्तर में कुछ स्थानों पर दिखाई देने वाली रंगीन "उत्तरी रोशनी" की लहरें देखीं जो पहाड़ियों की खदानों में गहराई तक चली जाती थीं. वापसी में उन्होंने लंदन के प्रसिद्ध शहर का भी दौरा किया.

फ्रांस लौटने के बाद, जूल्स को समझ में आया कि वो किस चीज़ के बारे में लिखना चाहते थे. एक साल के भीतर, उन्होंने साहसिक उपन्यासों पर काम शुरू कर दिया, जिसने उन्हें दुनिया के सबसे लोकप्रिय लेखकों में से एक बना दिया. वो युवा लड़का जिसने दुनिया को पास लाने वाले जहाजों पर अचंभा किया था, वो बड़ा होकर एक लेखक बन गया, और वो पाठकों को दुनिया भर के अद्भुत कारनामें दिखाने ले गया.

अध्याय 1

वो लड़का जिसे जहाजों से प्यार था ....

जूल्स वर्न का जन्म 8 फरवरी, 1828 को फ्रांस के नैनटेस में हुआ था. लगभग जैसे ही वो चल सकने को तैयार हुआ, वो यात्रा करने के लिए भी तैयार था.

वर्न परिवार का घर फेयदेउ द्वीप पर स्थित था, जो लॉयर नदी के बीच में स्थित था. वो द्वीप, नैनटेस शहर का एक हिस्सा था.

लगभग एक वर्ष के बाद, वर्न परिवार शहर के उस हिस्से में चले गए जो मुख्य भूमि पर था. वहां पर जूल्स के भाई, पॉल का जन्म 1829 में हुआ. उनके पिता, पियरे, एक सफल वकील थे. परिवार के पास दो नौकरानियों के लिए कमरों के साथ एक अच्छा घर था. नौकरानियां घर में मां सोफी की मदद करती थीं.
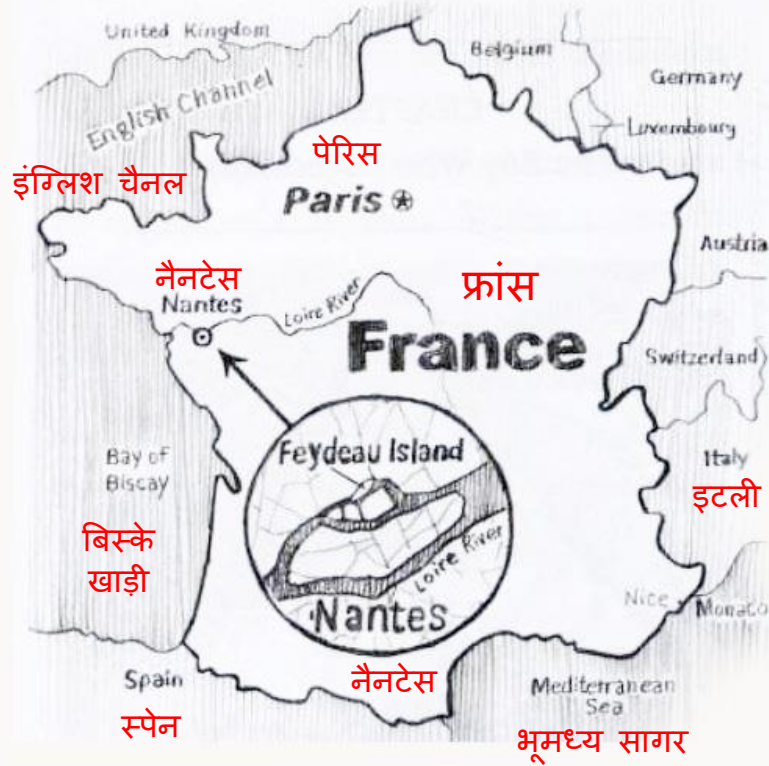
वर्न परिवार इमारत की दूसरी मंजिल पर रहता था, क्योंकि जब नदी अपने किनारों से ऊपर उठती तब पहली मंजिल में अक्सर बाढ़ आ जाती थी. अपने घर की बालकनियों से, जूल्स और पॉल, नावों को नदी में ऊपर-नीचे जाते देखते थे. नैनटेस वो जगह थी जहां दुनिया के कई देशों के जहाज फ्रांस आते थे.

जूल्स के घर के पास ही एक दुकान थी जो दूर-देशों के पक्षियों और जानवरों को बेचती थी. रात में, जूल्स को कभी-कभी दुकान से तोतों और बंदरों के रोने की आवाज़ सुनाई देती थी.

एक युवा लड़के के रूप में, जूल्स उन जगहों को देखने को बहुत इच्छुक था जहां से वे जहाज आए थे. उन्होंने बाद में लिखा, "मेरी कल्पना में, मैं उनकी रस्सियों पर चढ़कर उनके शीर्ष तक पहुँच जाता था और वहां मैं उनके मस्तूलों की गांठें पकड़ता था. मैं कैसे घाट के किनारे [तटरेखा] पार करना चाहता था और उनके डेक पर चलना चाहता था!" लेकिन जूल्स के पिता के पास अपने पहले बेटे के लिए अन्य योजनाएं थीं. वह चाहते थे कि जूल्स भी एक वकील बनें.
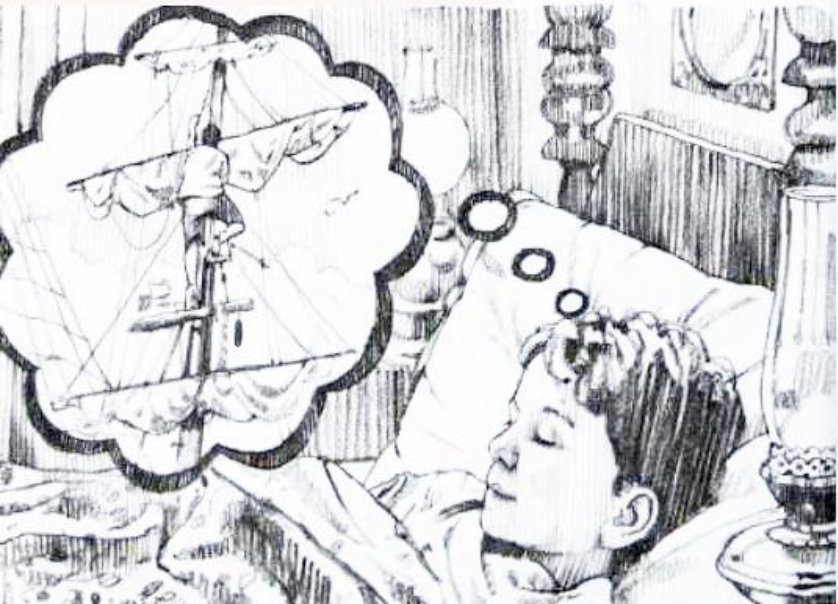
जब जूल्स छह साल के थे, तब उन्हें और पॉल को उनकी शिक्षा के लिए एक बोर्डिंग स्कूल में भेजा गया. हालांकि स्कूल उनके घर से ज्यादा दूर नहीं था, लेकिन लड़के स्कूल में ही रहते थे. भाइयों ने पढ़ना, लिखना और गणित के सवालों को हल करना सीखा.

लेकिन जब उनसे बना वे खेतों में चले जाते थे. जूल्स ने बाद में लिखा कि वो और पॉल ऊंचे पेड़ों पर चढ़ते थे और शाखाओं पर आराम करते थे. "हमने यात्रा करने की तब तक योजना बनाई, जब तक शाखाएं हवा से हिलने नहीं लगीं."

जब जूल्स नौ साल के थे, पियरे ने नदी के किनारे पूर्व के एक गांव में परिवार की छुट्टियों के लिए एक झोपड़ी किराए पर ली. वहाँ रहते हुए, जूल्स और पॉल ने आखिरकार नौकायन करना सीख लिया. उन्होंने एक छोटी नाव उधार ली और उसे उथली नदी में डाल दिया. वे जल्द ही नाव को चलाना और उसे हवा के साथ ले जाना सीख गए. जल्द ही उन्होंने उन रोमांचों को जीना शुरू किया जिनके बारे में उन्होंने हमेशा सपना देखा था. . . भले ही वे हमेशा रात के खाने के लिए समय पर घर लौट आते थे.

उनकी पसंदीदा किताबों में से एक, "रॉबिन्सन क्रूसो" पुस्तक में भी ऐसा ही हुआ था. लेकिन ज्वार-भाटे का पानी जल्दी से निकल गया, और जूल्स आसानी से उथले पानी में से किनारे सुरक्षित पहुँच गए.

वर्न परिवार में अंततः तीन बेटियाँ भी हुईं : अन्ना, मथिल्डे और मैरी. पांच बच्चों के साथ, पियरे और सोफी को और कमरों की जरूरत थी. 1840 में, वे एक नए और बड़े अपार्टमेंट में चले गए. पियरे बहुत अमीर हो गए थे. परिवार अब सुंदर फर्नीचर, बैठक में एक बड़ी घड़ी और यहां तक कि नौकरानियों को अलग कमरे भी दे सकते थे.
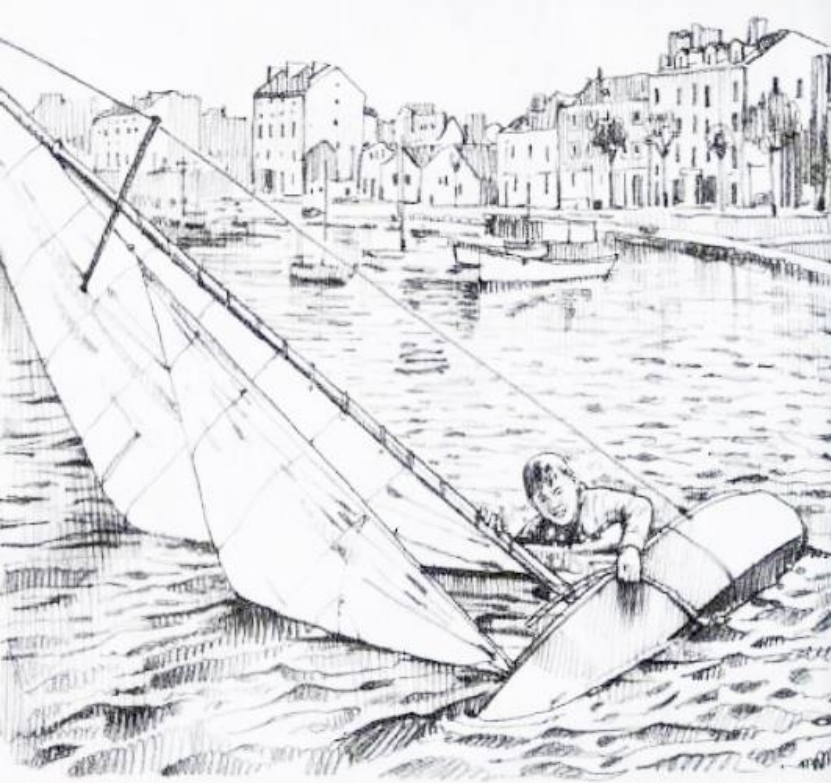
अगले वर्ष, 1838 की गर्मियों में, जब जूल्स नाव पर अकेले नौकायन कर रहे थे तो वो कुछ परेशानी में पड़ गए. नाव के तल का एक हिस्सा टूट गया, और उनकी छोटी नाव डूब गई! जूल्स पास के एक रेतीले तट पर पहुंचे. इस छोटे से जहाज की दुर्घटना का अनुभव बहुत यादगार रहा. उन्होंने बाद में लिखा कि उन्होंने भोजन इकठ्ठा करने के लिए एक झोपड़ी बनाने और मछली पकड़ने की बंसी बनाने के बारे में सोचा.

जहाज़ से फेंके लोग

"कास्टअवे" शब्द आमतौर पर एक जहाज़ की तबाही के बाद बचे लोगों को संदर्भित करता है. "रॉबिन्सन क्रूसो" और "द स्विस फैमिली रॉबिन्सन" शायद अब तक की दो सबसे लोकप्रिय "कास्टअवे" कहानियां हैं.

"रॉबिन्सन क्रूसो" को डैनियल डेफो द्वारा लिखा गया था और वो 1719 में प्रकाशित हुई थी. वो किताब अलेक्जेंडर सेल्किर्क नामक एक स्कॉटिश नाविक के वास्तविक जीवन के रोमांच पर आधारित थी. वो एक द्वीप पर फंसे गए और कई महीनों तक अकेले रहे. डेफो का अपाहिज, क्रूसो, पहले तो अकेला रहता था, लेकिन बाद में उसे एक स्थानीय व्यक्ति मिल गया जिसे उसने "फ्राइडे" बुलाया.
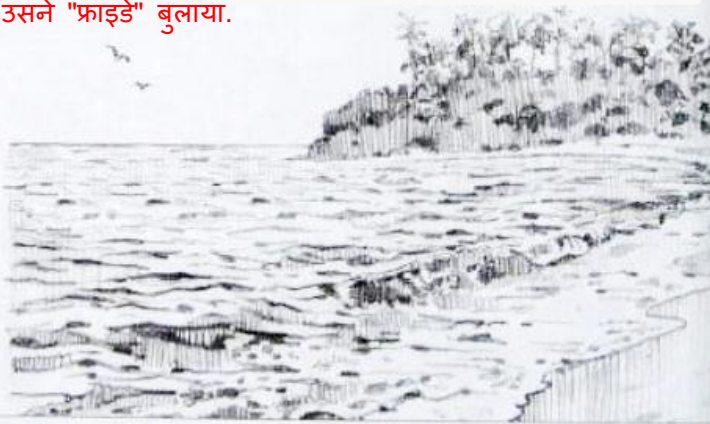
1812 में स्विस लेखक जोहान डेविड वाइस की किताब "द स्विस फैमिली रॉबिन्सन" प्रकाशित हुई. उस उपन्यास में, ऑस्ट्रेलिया की यात्रा के दौरान चार पुत्रों वाला एक परिवार, समुद्र में फंस गया. लंबे समय तक वो परिवार प्रशांत महासागर के एक द्वीप पर रहने को मजबूर हुआ.

अपने जीवन के अंत में, जूल्स वर्न ने वाइस की कहानी की अगली कड़ी लिखी. 1900 में, उनकी पुस्तक "द कैस्टवेज़ ऑफ़ द फ्लैग" प्रकाशित हुई, जिसमें रॉबिन्सन परिवार द्वारा किए नए कारनामों का वर्णन किया गया था.

जूल्स और पॉल ने एक नए स्कूल में दाखिला लिया - सेंट डोनाटियन में. वहां उन्होंने लैटिन, ग्रीक और कविताओं का अध्ययन किया.
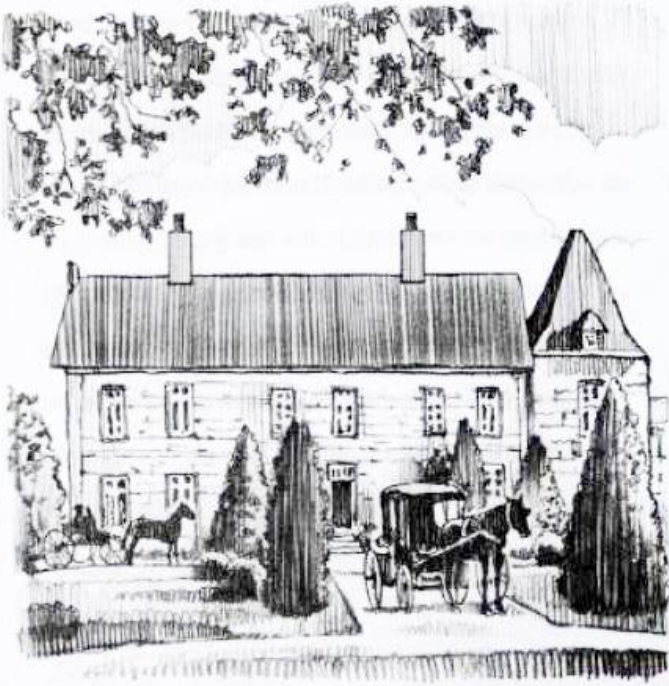
जूल्स को स्कूल ज्यादा पसंद नहीं आया, लेकिन उन्हें लिखना पसंद था. उन्होंने कवितायें और लघु कथाएँ लिखीं, और जितना हो सका उन्होंने पढ़ा. जैसे-जैसे उन्होंने पढ़ा और लिखा, जूल्स को लगने लगा कि शायद एक वकील का जीवन उनके लिए ठीक नहीं होगा.

अध्याय दो

पेरिस के लिए दूर

जूल्स ने 1846 में हाई स्कूल से स्नातक की उपाधि प्राप्त की. वो और पॉल दोनों, घर छोड़कर एक जहाज के चालक दल में शामिल होना चाहते थे. पॉल ने जल्द ही एक समुद्री कैडेट के रूप में प्रशिक्षण शुरू किया. हालांकि, पियरे ने, जूल्स के एक वकील बनने पर ज़ोर दिया. जूल्स निराश था, लेकिन उसने वैसा ही किया जैसा उसके पिता ने कहा. उसने पेरिस में अपने कानून का अध्ययन करने के लिए घर छोड़ दिया.

जूल्स को पेरिस बहुत पसंद था. वहां की दुनिया भर के लोगों से भरी भीड़-भाड़ वाली सड़कों से वो प्यार करता था. उसे बड़ी-बड़ी इमारतें, चौड़े रास्ते, गाड़ियां, नाटक और संगीत दिखाने वाले थिएटर भी बहुत पसंद थे.

अगस्त 1848 में, उसने अपनी परीक्षा पास की और वो एक वकील बन गया. जूल्स अपने दोस्त एडौर्ड बोनामी के साथ एक छोटे से अपार्टमेंट में चला गया. किसी भी आदमी के पास ज्यादा पैसा नहीं था, लेकिन उन्हें शहर के बीच में रहने में खूब मजा आता था. जूल्स परिवार ने उन्हें थोड़े पैसे भेजे.

मकान मालकिन उनके लिए भोजन लेकर आती थी. हालाँकि वो अब आरामदायक जीवन नहीं जी रहा था, जूल्स बहुत खुश था. उसने अपना खाली समय नाटकों, कविताओं, सॉनेट्स और गीत लिखने में बिताया.

क्या उसके पिता इससे खुश थे?

नहीं!

पियरे को लगता था कि उनके बेटे को अपना समय लिखने में बर्बाद नहीं करना चाहिए. उस समय लेखक, सिर्फ लेखन कार्य से ही, जीविकोपार्जन की आशा नहीं कर सकते थे. बहुत कम लोग अखबारों के अलावा कुछ और पढ़ते थे और किताबों की अक्सर बहुत कम प्रतियां ही बिकती थीं. पत्रिकायें, लेखकों को बहुत अधिक भुगतान नहीं करती थीं.

पियरे नहीं चाहते थे कि उनका बेटा क़ानून की पढ़ाई को बर्बाद करे. वो यह भी चाहते थे कि बेटा एक दिन घर आए और उनकी कानूनी प्रैक्टिस संभाले.

विक्टर ह्युगो

लेकिन जूल्स लिखते रहे. 1848 के एक पत्र में उन्होंने लिखा,

"यह शानदार है ... साहित्य के साथ निकट संपर्क में रहने के लिए, यह समझने के लिए कि मैं किस दिशा में जा रहा हूँ."

पेरिस में, जूल्स को कई अन्य लेखकों से मिलने का अवसर मिला. अपने चाचा के ज़रिये जूल्स का परिचय विक्टर ह्यूगो से हुआ, जो तब तक के सबसे प्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखकों में से एक थे. अलेक्जेंड्रे डुमास के साथ भी उनकी दोस्ती हो गई. यंग अलेक्जेंड्रे ने उन्हें प्रकाशन व्यवसाय के लोगों से मिलवाया. "हम लगभग एक ही बार में दोस्त बन गए," जूल्स ने बाद में लिखा. "मैं कह सकता हूं कि वह मेरा पहला हमदर्द था."

अलेक्जेंड्रे ने अपने विचारों से भी जूल्स की मदद की. उनमें से एक नाटक मंच पर प्रदर्शित होने वाला जूल्स द्वारा लिखित पहला नाटक बना. 1850 में, "ब्रोकन स्ट्रॉ" पेरिस में दो सप्ताह तक चला.

द डुमास: पिता और पुत्र

अलेक्जेंड्रे डुमास (1802-1870) 1800 के दशक में फ्रांस के सबसे लोकप्रिय लेखकों में से एक थे. उन्होंने अपने करियर की शुरुआत नाटकों और फिर उपन्यासों से की. फ्रांस के राजा के लिए काम करने वाले सैनिकों के बारे में उनका सबसे प्रसिद्ध कृति "द थ्री मस्किटियर" थी. उन्होंने एक फ्रांसीसी अभिजात वर्ग के पतन और उत्थान के बारे में एक पुस्तक "द काउंट ऑफ मोंटे क्रिस्टो" भी लिखी.

डुमास का बेटा, जिसका नाम अलेक्जेंड्रे (1824-1895) था, भी एक प्रसिद्ध लेखक बना. उसका सबसे प्रसिद्ध उपन्यास "केमिली" था. फ्रेंच में, इन लेखकों को अक्सर डुमास पियर और डुमास फीस, पिता-पुत्र के नाम से बुलाया जाता था.

वो नाटक शाही परिवार के एक सदस्य के बारे में था. जूल्स बहुत खुश हुआ, लेकिन जब उसने अपने पिता को खबर भेजी, तो पियरे बहुत परेशान हुए. उन्हें अभी भी इस बात की चिंता थी कि उनका बेटा एक लेखक के रूप में कभी भी सफल नहीं होगा.

1851 में, जूल्स ने किसी पत्रिका को अपनी पहली कहानी बेची. उसके तुरंत बाद उनकी एक और कहानी छपी. उसका नाम था "ए बैलून जर्नी". अगले पचास वर्षों तक हवाई जहाजों का आविष्कार नहीं होने वाला था. गर्म हवा के गुब्बारे ही एकमात्र ऐसा तरीका था जिसमें उस समय लोग "उड़" सकते थे. कहानी में, एक गुब्बारे की यात्रा तब खतरनाक हो जाती है जब एक अपराधी, हीरो को रोकने की कोशिश करता है. इस कहानी के साथ, एक लेखक के रूप में जूल्स की अपनी यात्रा शुरू हुई.
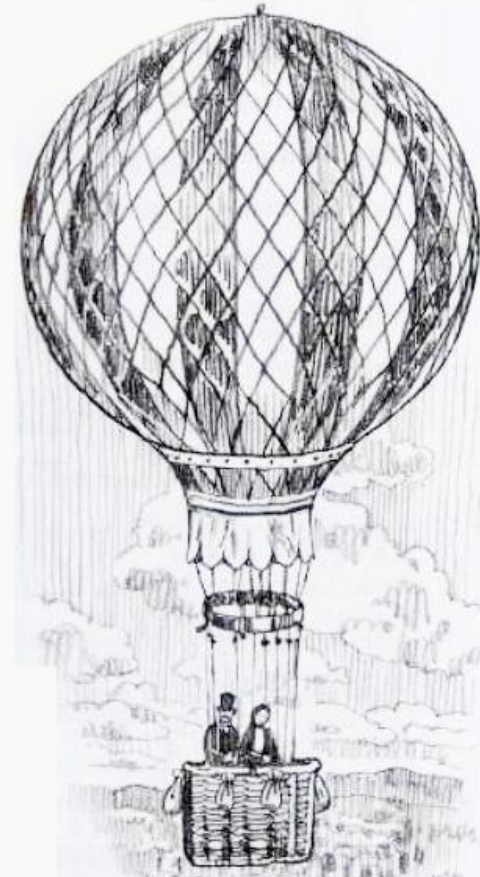
गर्म हवा के गुब्बारे

1783 में, फ्रांस के मोंटगॉल्फियर भाइयों ने गर्म हवा भरकर एक विशाल कपड़े का थैला फुलाया. उनका बैग - कभी-कभी उसे लिफाफा भी कहा जाता था, असल में वो एक केन की टोकरी से जुड़ा होता था जिसमें लोग सवारी कर सकते थे. क्योंकि गर्म हवा ऊपर उठती थी, इसलिए गुब्बारा भी ऊपर उठता था. वो पहली मानवयुक्त गुब्बारा उड़ान थी.

अगली शताब्दी में, लोगों ने गर्म हवा और गैस से भरे गुब्बारों के साथ प्रयोग किए, जिससे लंबी-और-लंबी यात्राएं संभव हुईं. हवा जिस दिशा में चलती उसी दिशा में गुब्बारे भी चल देता था. चालक केवल गुब्बारे की ऊपर-नीचे वाली चाल ही नियंत्रित कर सकता था. आसमान में विशाल रंगीन तैरती वस्तुओं को देखकर जमीन पर लोग अक्सर रोमांचित हो जाते थे.

आज, गर्म हवा के गुब्बारों को नियंत्रित करना बहुत आसान है. उनका उपयोग आज भी वैज्ञानिक डेटा एकत्र करने, आनंद यात्राएं और यहां तक कि विज्ञापनों के लिए भी किया जाता है.

1852 तक, जूल्स के पिता उसे काफी झेल चुके थे. उन्होंने चेतावनी दी कि वो जूल्स की मदद के लिए पैसे भेजना बंद कर देंगे. पियरे ने जूल्स से कहा कि वो घर आकर वकील के रूप में काम करे. पर जूल्स ने वो प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया. हालाँकि उसके पास कानून की डिग्री थी, लेकिन जूल्स ने कभी भी वकील के रूप में काम नहीं किया. इसके बजाए, उन्होंने लेखक बनने के अपने सपने को जिया.

ऐसा करने के लिए, उन्हें जो कोई लेखन कार्य मिला वो उन्होंने किया. उन्होंने अलेक्जेंड्रे डुमास और अपने अन्य लेखक मित्रों के साथ समय बिताया.

1852 में, उन्होंने "लिरिक थिएटर" के सचिव के रूप में भी काम किया. दो साल तक, उन्होंने पोस्टर बनाए, थिएटर के बजट पर नज़र रखी और नाटकों को चुनने में मदद की. अंत में, जूल्स के पास एक स्थिर नौकरी थी जिसने उन्हें अपना खर्च चलाने में सक्षम बनाया.

1856 में, जूल्स कॉलेज के अपने एक पुराने दोस्त की शादी में शामिल हुए. वहां उनकी मुलाकात होनोरिन-अन्ना-हेबी डी वियान मोरेल से हुई. जूल्स, होनोरिन से शादी करना चाहते थे. लेकिन एक अच्छी नौकरी के बिना, वो उसके परिवार को यह विश्वास नहीं दिला पाए कि वो होनोरिन के योग्य थे. इसलिए उन्होंने स्टॉक का कारोबार करने वाले व्यापारियों के लिए एक क्लर्क के रूप में काम करना शुरू किया. वो कोई लेखन कार्य नहीं था, लेकिन इससे वो अपने बिलों का भुगतान कर पाए. जनवरी 1857 में, जूल्स और होनोरिन का विवाह हुआ.

होनोरिन दहेज लाई, जो एक महिला अपने पति को शादी करने पर उपहार के रूप में देती है. होनोरिन के दहेज के कारण परिवार आराम से रहने लगा. होनोरिन एक विधवा थी और उसकी दो छोटी बेटियाँ - वेलेंटाइन और सुज़ैन थीं. अब, जूल्स एक पति और सौतेले पिता थे.

शेयर बाजार में काम करते हुए भी जूल्स लिखते रहे. उन्होंने कला, प्रसिद्ध कलाकारों की जीवनियों और पेरिस में जीवन के बारे में नाटकों के बारे में लंबे लेख प्रकाशित किए.

भाग्य से 1859 में, जूल्स अपनी पहली समुद्री यात्रा कर पाए. वो और उनका दोस्त एरिस्टाइड हिग्नार्ड, इंग्लैंड और स्कॉटलैंड गए.

एरिस्टाइड का भाई एक कार्गो शिपिंग लाइन के लिए काम करता था. उसने उन दोनों के लिए मुफ्त यात्रा की पेशकश की. स्कॉटलैंड में, जूल्स ने कुछ ऐसी जगहें देखीं जिनके बारे में उन्होंने केवल किताबों में ही पढ़ा था. जूल्स अपने अनुभव से रोमांचित और प्रेरित थे. उनका आजीवन का रोमांच, अब केवल एक दिवास्वप्न नहीं था, वो धीरे-धीरे एक वास्तविकता में बदलता जा रहा था.

अध्याय 3

अंत में, एक उपन्यासकार

1861 में, जूल्स और होनोरिन का पहला बच्चा हुआ. उन्होंने अपने बेटे का नाम मिशेल रखा.

पेरिस में जीवन स्कॉटलैंड जैसा बिल्कुल नहीं था. स्कॉटलैंड में एक बड़े जहाज पर लहरों की सवारी करना, उबड़-खाबड़ पर्वत श्रृंखलाओं से होकर लंबी पैदल यात्रा करना या स्कॉटिश हाइलैंड्स में प्राचीन महलों की खोज करने का कुछ अलग ही आनद था.

जब वो वापिस लौटे तो जूल्स का दिमाग नए-नए विचारों से भरा हुआ था.

एक साल बाद, जूल्स उस आदमी से मिले जो हमेशा के लिए उनका जीवन बदल देगा. पियरे-जूल्स हेट्ज़ेल एक पत्रिका और पुस्तक प्रकाशक थे. उन्होंने विक्टर ह्यूगो, एमिल ज़ोला और जॉर्जेस सैंड सहित फ्रांस के कई प्रसिद्ध लेखकों के साथ काम किया था. जूल्स ने हेट्ज़ेल को उनकी अब तक की सबसे लंबी कहानी की पांडुलिपि पढ़ने को दी. हेट्ज़ेल ने उसमें कुछ बदलाव करने को कहा, जिसे जूल्स ने खुशी-खुशी किया. फिर हेट्ज़ेल, जूल्स के पहले उपन्यास को प्रकाशित करने के लिए सहमत हुए.

पियरे-जूल्स हेट्ज़ेल

"फाइव वीक्स इन ए बैलून" 1863 की शुरुआत में प्रकाशित हुआ. उसमें अफ्रीका के ऊपर एक नाटकीय हवाई यात्रा की कहानी बताई गई थी.

जूल्स खुद कभी भी हॉट-एयर बैलून में नहीं उड़े थे. लेकिन वो इस विचार से उत्साहित थे. बाद में उन्होंने लिखा कि उनकी पुस्तक वास्तव में गुब्बारे से यात्रा करने के बारे में नहीं थी. मैंने "फाइव वीक्स इन ए बैलून" को गुब्बारे की उड़ान के बारे में नहीं, बल्कि अफ्रीका के बारे में एक कहानी के रूप में लिखा था. मुझे हमेशा भूगोल और यात्रा में बहुत दिलचस्पी थी. मेरे यात्रियों के पास गुब्बारे के अलावा अफ्रीका से होकर यात्रा करने का और कोई तरीका नहीं था."

जूल्स ने अपनी पुस्तक लिखने से पहले अफ्रीका के बारे में बहुत कुछ पढ़ा था. उन्होंने दुनिया में हो रही विज्ञान में नई खोजों के साथ अपने रोमांचकारी लेखन कौशल को भी जोड़ा था. उपन्यास लिखने का एक वो बिल्कुल नया तरीका था.

"फाइव वीक्स इन ए बैलून" शुरू में अच्छी नहीं बिकी. लेकिन उसी साल, बैलून चालक नादर ने "ले जाइंट" (द जाइंट) नामक एक विशाल गुब्बारा लॉन्च किया. नादर जूल्स के मित्र थे. वे एक समूह से संबंधित थे जो नवीनतम विज्ञान समाचारों पर चर्चा करने के लिए एकत्र होते थे.
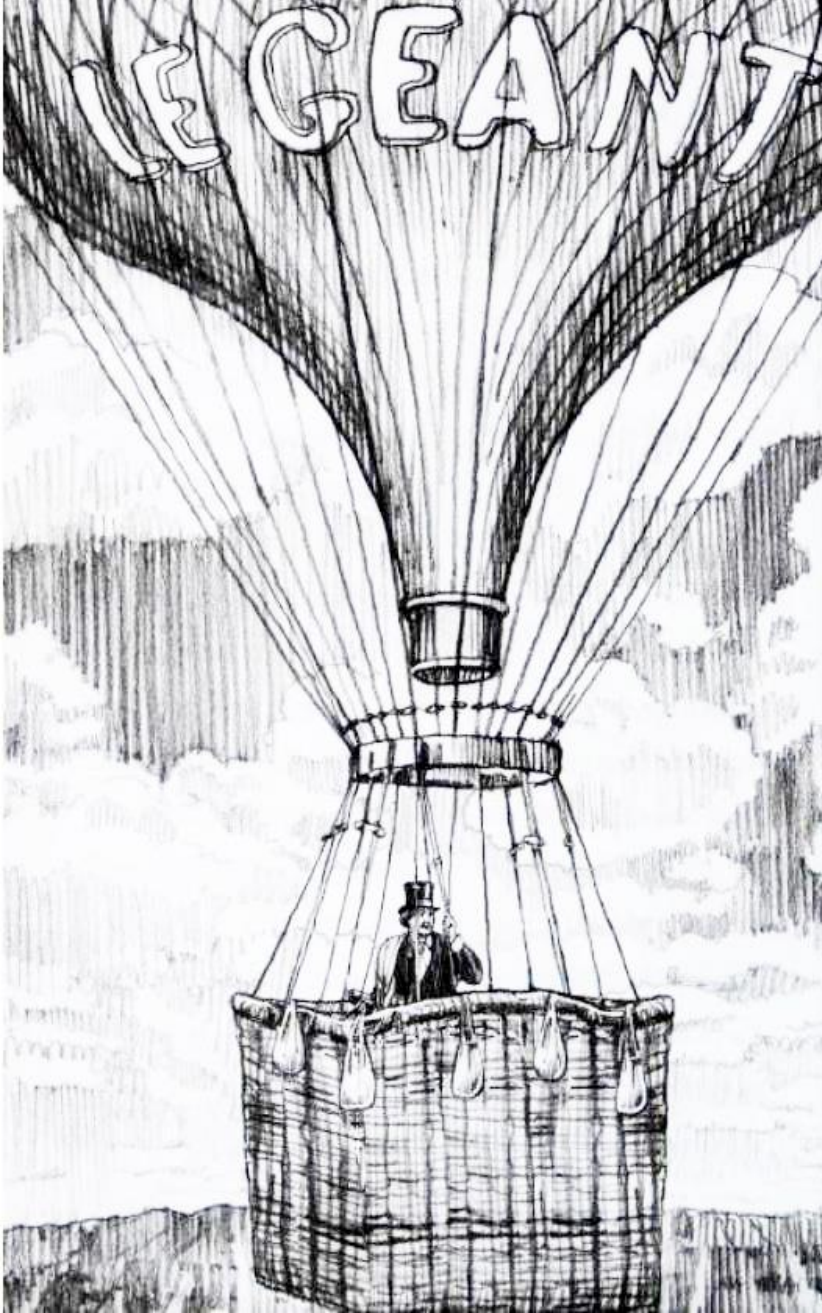
नादर एक फोटोग्राफर भी थे और अपने गुब्बारे में सवार होकर जमीन के ऊपर से, हवाई तस्वीरें लेने वाले पहले लोगों में से एक थे. "ले जाइंट" की उड़ान ने लोगों को जूल्स की किताब खरीदने के लिए प्रेरित किया. उस समय —यूरोप में और दूर अमेरिका में—कई नए विचार जूल्स के जीवन में आ रहे थे. वैज्ञानिक और इंजीनियर ऐसी खोज कर रहे थे जिससे लोगों के जीने का तरीका बदलने वाला था. स्टीम पावर का इस्तेमाल करने वाले इंजनों को, जहाजों और ट्रेनों को पहले से कहीं ज्यादा तेजी से यात्रा करने के लिए डिजाइन किया जा रहा था.
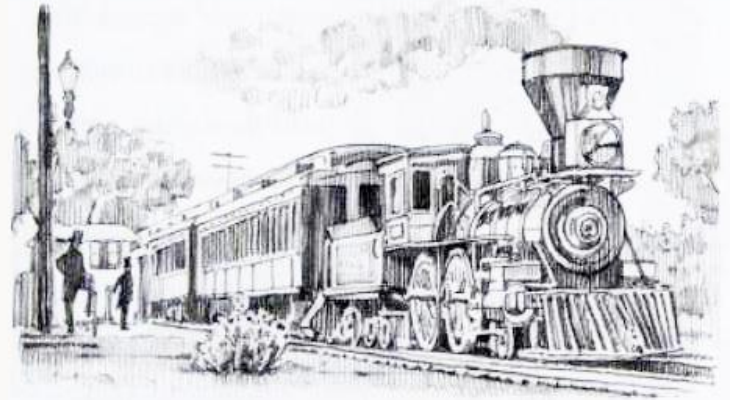
लोग ग्लाइडर और उड़ने वाली मशीनों के साथ प्रयोग कर रहे थे. खोजकर्ता अफ़्रीकी के जंगलों, एशिया के पहाड़ों, और दुनिया के कई अज्ञात क्षेत्रों से ख़बरें वापस ला रहे थे.

जूल्स सही समय पर और सही जगह पर थे. उन्होंने एक नई तरह की कहानी गढ़ी, जिसमें वास्तविक जीवन के वैज्ञानिक विकास के साथ उन्होंने शानदार कहानी कहने की शैली को भी जोड़ा. हालांकि जूल्स ने अपने लेखन का वर्णन करने के लिए कभी भी "विज्ञान कथा" शब्द का इस्तेमाल नहीं किया लेकिन असल में वो वही कर रहे थे.

हेट्ज़ेल को लगा कि विज्ञान में जूल्स की रुचि और साहसिक कहानियों को विकसित करने में उनकी प्रतिभा, उन दोनों लोगों के लिए लाभदायक सिद्ध हो सकती थी. उन्होंने हर साल जूल्स की कम-से-कम एक किताब प्रकाशित करने का वादा करते हुए एक अनुबंध पर हस्ताक्षर किए.

साइंस फिक्शन क्या है?

साइंस फिक्शन, जिसे कभी-कभी "साइंस-फाई" कहा जाता है, एक प्रकार की कहानी होती है जो वैज्ञानिक तथ्यों को उन चीजों के साथ मिलाती है जो लेखक की कल्पना से आते हैं. विज्ञान-कथा लेखक - प्रौद्योगिकी, जीव-विज्ञान, इंजीनियरिंग और अन्य क्षेत्रों से विचारों को लेते हैं. वे कल्पना करते हैं कि भविष्य में उस वैज्ञानिक प्रगति को कैसे लागू किया जायेगा - और वे अविष्कार लोगों के जीने के तरीके को कैसे बदलेंगे.

साइंस फिक्शन क्या हो सकता है की कुछ संभावनायें इस प्रकार हो सकती हैं : समय यात्रा, अंतरिक्ष यात्रा, अन्य ग्रहों पर जीवन, या कृत्रिम बुद्धि (कंप्यूटर).
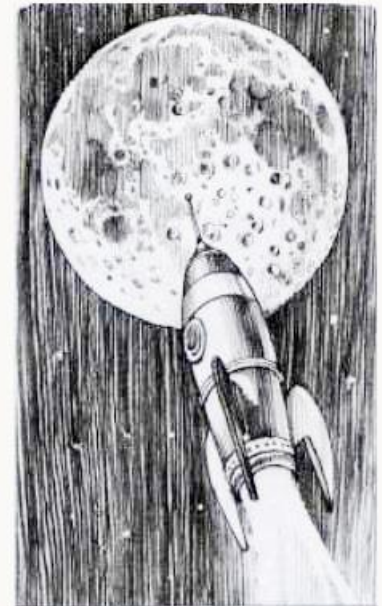
प्रत्येक पुस्तक को किसी पत्रिका में अध्याय-दर-अध्याय छापा गया. हर दो सप्ताह में एक नया अध्याय छपता था. कहानी समाप्त होने पर अध्यायों को मिलाकर एक पुस्तक के रूप में मुद्रित किया जाता था. इसे धारावाहिक लेखन कहा जाता है. पत्रिका के प्रत्येक अंक में कहानी का एक नया हिस्सा होने से, हेट्ज़ेल को पता था कि पाठक यह जानने के लिए बहुत अधीर होंगे कि कहानी में आगे क्या होगा और वो पत्रिका का अगला अंक खरीदने के लिए उत्सुक होंगे.

1864 में, जूल्स ने एक फ्रांसीसी पत्रिका में, लेखक एडगर एलन पो के काम के बारे में एक लंबा लेख लिखा. पो की रहस्य और डरावनी कहानियों ने, जूल्स के अपने लेखन को भी प्रभावित किया था.

जूल्स ने हेट्ज़ेल के लिए जो अगला धारावाहिक लिखा था उसका नाम था "द एडवेंचर्स ऑफ़ कैप्टन हैटरस".
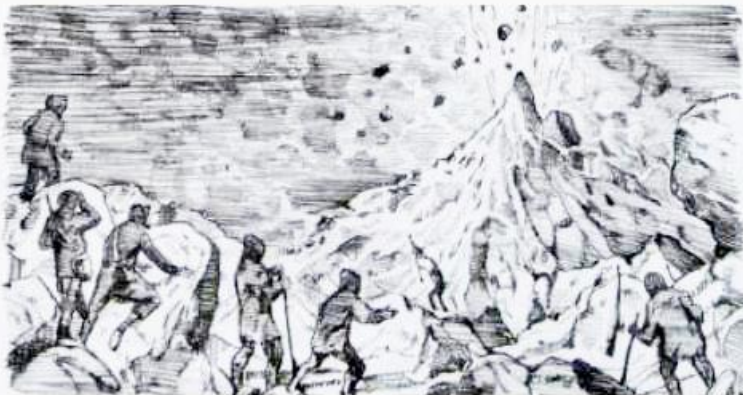
वो एक खतरनाक समुद्री यात्रा के बारे में था. जब कैप्टन हेटेरस और उसका दल अंततः उत्तरी ध्रुव पर पहुँचे, तो उन्हें वहाँ एक विशाल ज्वालामुखी फूटता हुआ दिखाई दिया. कहानी की पहली किस्त 1864 में, हेट्ज़ेल की पत्रिका में प्रकाशित हुई.

लेखन करते समय भी, जूल्स ने एक बिजनेस क्लर्क के रूप में काम करना जारी रखा. वह और होनोरिन, अपने तीन बच्चों के साथ, पेरिस के एक अच्छे हिस्से में एक बड़े घर में चले गए.

एडगर एलन पो (1809-1849)

अमेरिकी कवि, संपादक और लेखक एडगर एलन पो थोड़े ही समय के लिए जीवित रहे.
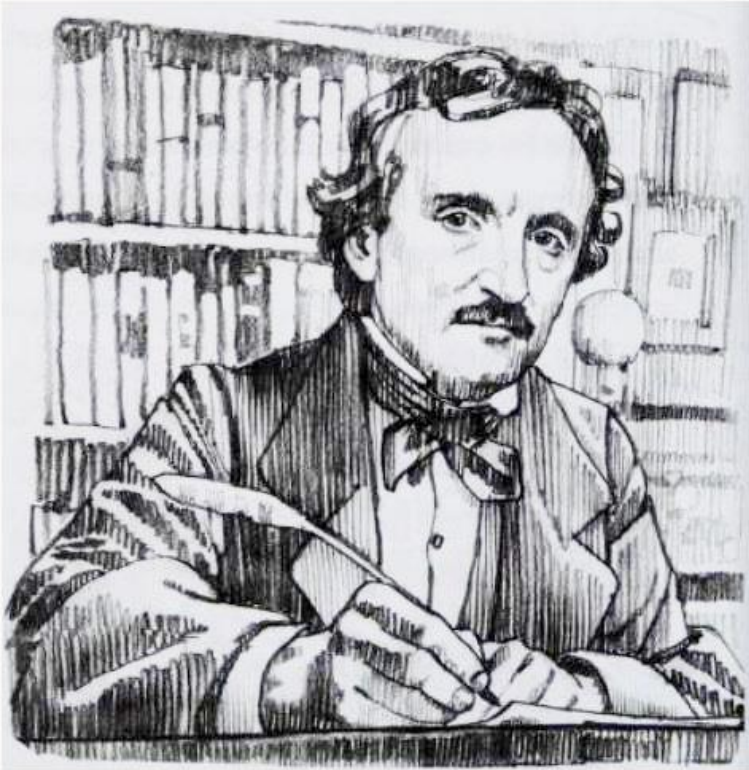
लेकिन उनकी काम का अपने समय के लेखकों और बाद में आने वाले लेखकों पर भी प्रभाव पड़ा. पो, रहस्य और डरावनी कहानियाँ लिखने वाले पहले लेखकों में से थे. उनकी गहरी कल्पना ने लेखकों को तलाशने के लिए एक नई दुनिया खोल दी.

पो की सबसे प्रसिद्ध रचनाएँ कविताएँ थीं, जैसे कि "द रेवेन", और "द मर्डर्स इन द रुए मॉर्ग," "द टेल-टेल हार्ट," और "द गोल्ड-बग" सहित लघु कथाएँ. आज उन्हें अमेरिकी रहस्य लेखन का जनक माना जाता है. अमेरिका के मिस्ट्री राइटर्स ने अपने सर्वोच्च सम्मान का नाम "एडगर" अवार्ड रखा है.

उस गर्मी में, जूल्स नैनटेस लौट आए. अब जबकि वे एक प्रकाशित लेखक थे, और उन्हें अधिक काम मिलने की उम्मीद थी इसलिए उनका घर में भव्य स्वागत किया गया. लेखक का अभिवादन करने के लिए पड़ोसी आए, जिन्हे वे तब से जानते थे जब वो एक लड़के थे. उन्होंने जूल्स और उनके परिवार के स्वागत में पार्टियां आयोजित कीं.

नैनटेस में रहते हुए, जूल्स ने अपने अगले उपन्यास पर काम किया, जिसका नाम था "जर्नी टू द सेंटर ऑफ द अर्थ". कहानी प्रोफेसर लिडेनब्रॉक नाम के एक वैज्ञानिक के बारे में थी जो मानते थे कि आइसलैंड में ज्वालामुखी, पृथ्वी के केंद्र के लिए एक मार्ग प्रदान करते थे. प्रोफेसर ने अपने भतीजे और एक गाइड के साथ गुफाओं में यात्रा की जो उन्हें बहुत दूर तक ले गई. वहाँ उन्हें एक नदी की खोज की जो उन्हें एक लंबी बेड़ा यात्रा पर ले गई.

प्राचीन जीवाश्म और विशाल मानव के प्रमाण इकट्ठे करने के बाद वे इटली में एक ज्वालामुखी विस्फोट से निकलकर वापस सतह पर आ गए ...!

"जर्नी टू द सेंटर ऑफ द अर्थ" इतनी लोकप्रिय हुई कि 1865 में दो अतिरिक्त अध्यायों के साथ उसका एक बड़ा सचित्र संस्करण प्रकाशित किया गया.

उस उपन्यास ने एक बार फिर जूल्स ने, खोज और नई वैज्ञानिक खोजों में रुचि दिखाई. उनके पाठक भी रोमांचकारी संभावनाओं से उतने ही उत्साहित थे जितने वे थे.

"द एडवेंचर्स ऑफ कैप्टन हैटरस" की एक पत्रिका में छपी समीक्षा से लोगों को पता चल गया कि आगे क्या होने वाला था. "कल्पना और विज्ञान में एक को कम किए बिना दूसरे को कम करना मुश्किल होता है. वे एक-दूसरे को एक खुशहाल मिलन में बढ़ाते हैं."

उनके पिछले दो उपन्यासों ने जूल्स को, फ्रांस के सबसे प्रसिद्ध लेखकों में से एक बना दिया था.

अध्याय 4

असाधारण यात्राएं

उत्तरी-ध्रुव और पृथ्वी के केंद्र में यात्रा की कहानियों के बाद, जूल्स ने अपने अगले पात्रों को, और भी आश्चर्यजनक साहसिक कार्य पर भेजा.

पूर्व सैनिकों के एक समूह ने पृथ्वी से चंद्रमा पर अपनी मिसाइल लॉन्च करने के लिए अपनी सबसे बड़ी तोपों का उपयोग करने की योजना बनाई. मिशेल अर्दन नाम के एक व्यक्ति ने खुद मिसाइल में यात्रा करने और स्वयं चंद्रमा का पता लगाने की पेशकश की. कहानी समाप्त होते ही अर्दन उसे कक्षा में स्थापित कर देता है. जूल्स ने अपने प्रिय दोस्त नादर के सम्मान में, अर्दन का नाम रखा था.

"अर्दन" नादर नाम का उल्टा शब्द है.

"फ्रॉम द अर्थ टू द मून" का पहला अध्याय 1865 की पतझड़ में प्रकाशित हुआ, और यह पुस्तक क्रिसमस के समय बिक्री के लिए बाजार में आई.
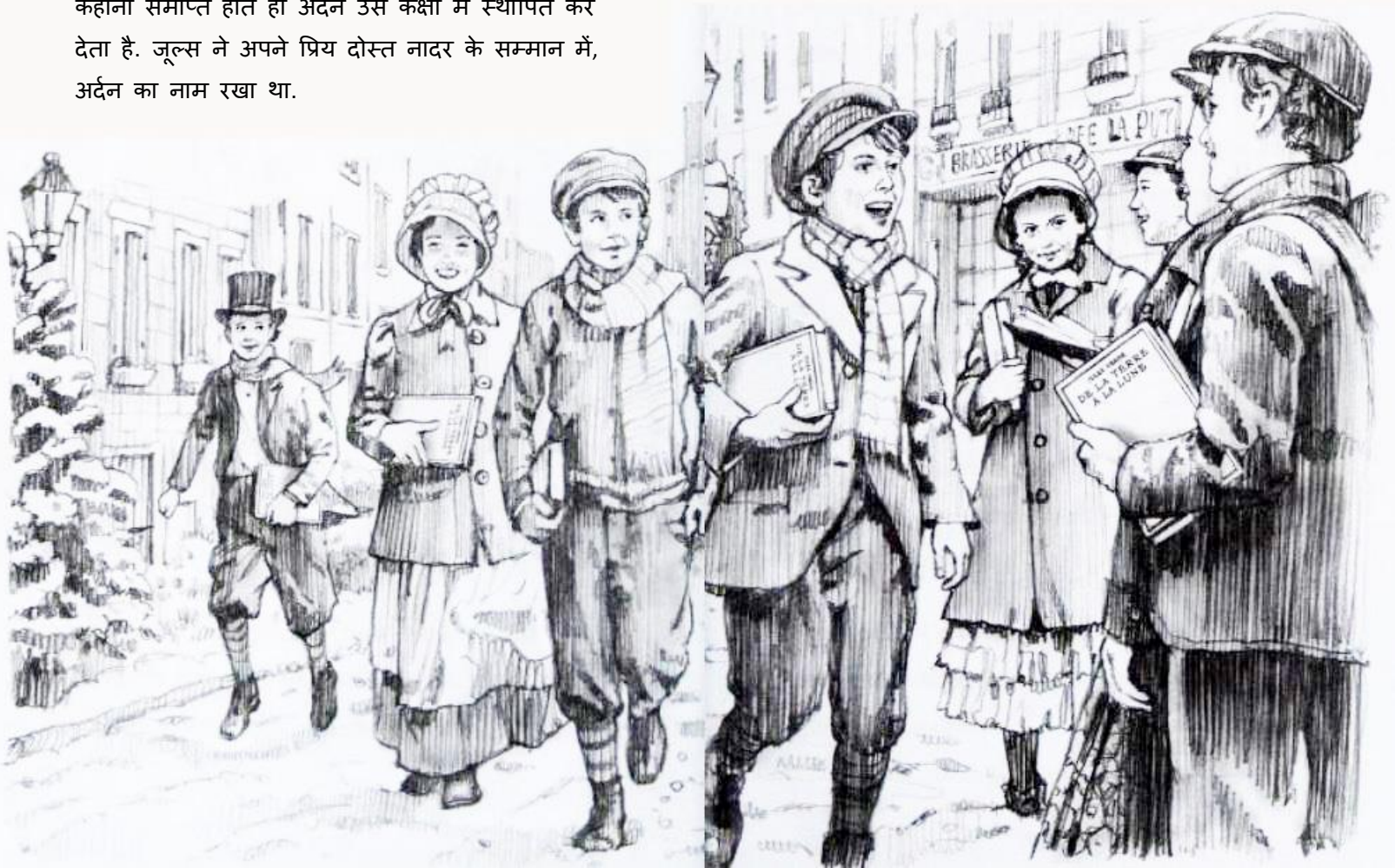
भविष्य के बारे में चार चीज़ों की जूल्स वर्न ने सही व्याख्या की :

• "फ्रॉम द अर्थ टू द मून", और उससे अगली पुस्तक "राउंड द मून", में जूल्स वर्न ने चंद्रमा के लिए स्पेसफ्लाइट के कुछ वास्तविक विवरणों की भविष्यवाणी की थी, जो 1969 तक संभव नहीं हुआ - एक सौ से अधिक वर्षों के बाद तक!

• पुस्तक में लोगों ने फ़्लोरिडा को अपने लॉन्च बिंदु के रूप में इस्तेमाल किया. उन्होंने जिस स्थान को चुना वो उस स्थान से बहुत दूर नहीं था जहां से नासा ने 1960 के दशक में, अपोलो मिशनों ने विस्फोट किया.

• उपन्यास के मेटल स्पेस कैप्सूल में तीन आदमी सवार हुए; जैसा कि बाद में असली अंतरिक्ष यात्रियों ने भी किया.

• कहानी में अंतरिक्ष यात्रियों ने सबसे पहले जानवरों को भेजकर अपने आविष्कार का परीक्षण किया. 1960 के दशक की शुरुआत में इंसानों से पहले बंदरों और कुत्तों को अंतरिक्ष में भेजा गया.
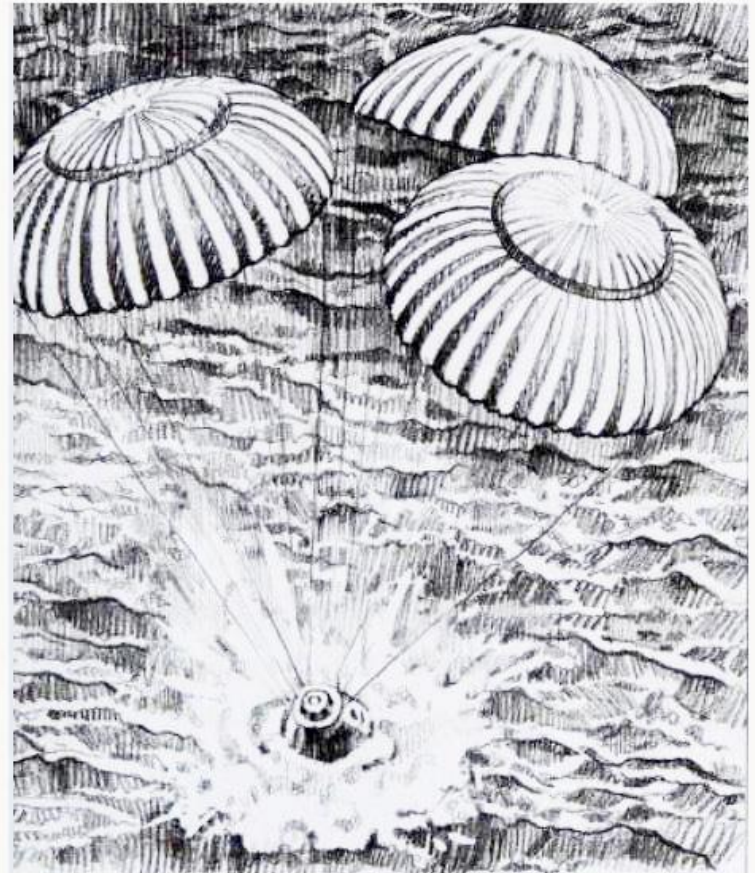
• जूल्स के अंतरिक्ष यात्री और असली जीवन के अंतरिक्ष यात्री, दोनों ही समुद्र में एक बड़े छपाके के साथ पृथ्वी पर वापस उतरे.

अपनी सफल साझेदारी को जारी रखते हुए, हेट्ज़ेल और जूल्स ने, 1866 में एक नए अनुबंध पर हस्ताक्षर किए. वे एक वर्ष में तीन पुस्तकें प्रकाशित करने के लिए सहमत हुए. हेट्ज़ेल ने किताबों की इस नई श्रृंखला को "द एक्स्ट्राऑर्डिनरी जर्नी" कहा. जूल्स के बारे में उन्होंने कहा, "उनका उद्देश्य आधुनिक विज्ञान द्वारा एकत्रित सभी भौगोलिक, भूवैज्ञानिक, भौतिक और खगोलीय ज्ञान को समेटकर हमारे ब्रह्मांड की कहानी को प्रस्तुत करना था."

जूल्स ने कई प्रकार की वैज्ञानिक पत्रिकाओं को पढ़ना जारी रखा और जितना संभव हुआ वो उतने विशेषज्ञों से भी मिले. वो विज्ञान समाचारों के बारे में पढ़ने और प्रसिद्ध वैज्ञानिकों और अन्वेषकों के व्याख्यान सुनने के लिए "सर्किल ऑफ द साइंटिफिक प्रेस" जैसे समूहों में शामिल हुए. उन्होंने फ्रांस और यूरोप के अन्य हिस्सों की यात्रा करके अपनी कहानियों के लिए विचार एकत्र किए. उन्होंने 1880 के दशक के अंत तक, लगभग हर साल अकेले, या दोस्तों और परिवार के साथ गर्मियों की यात्रा की.

1867 में, उन्होंने एक बहुत लंबी यात्रा की योजना बनाई.
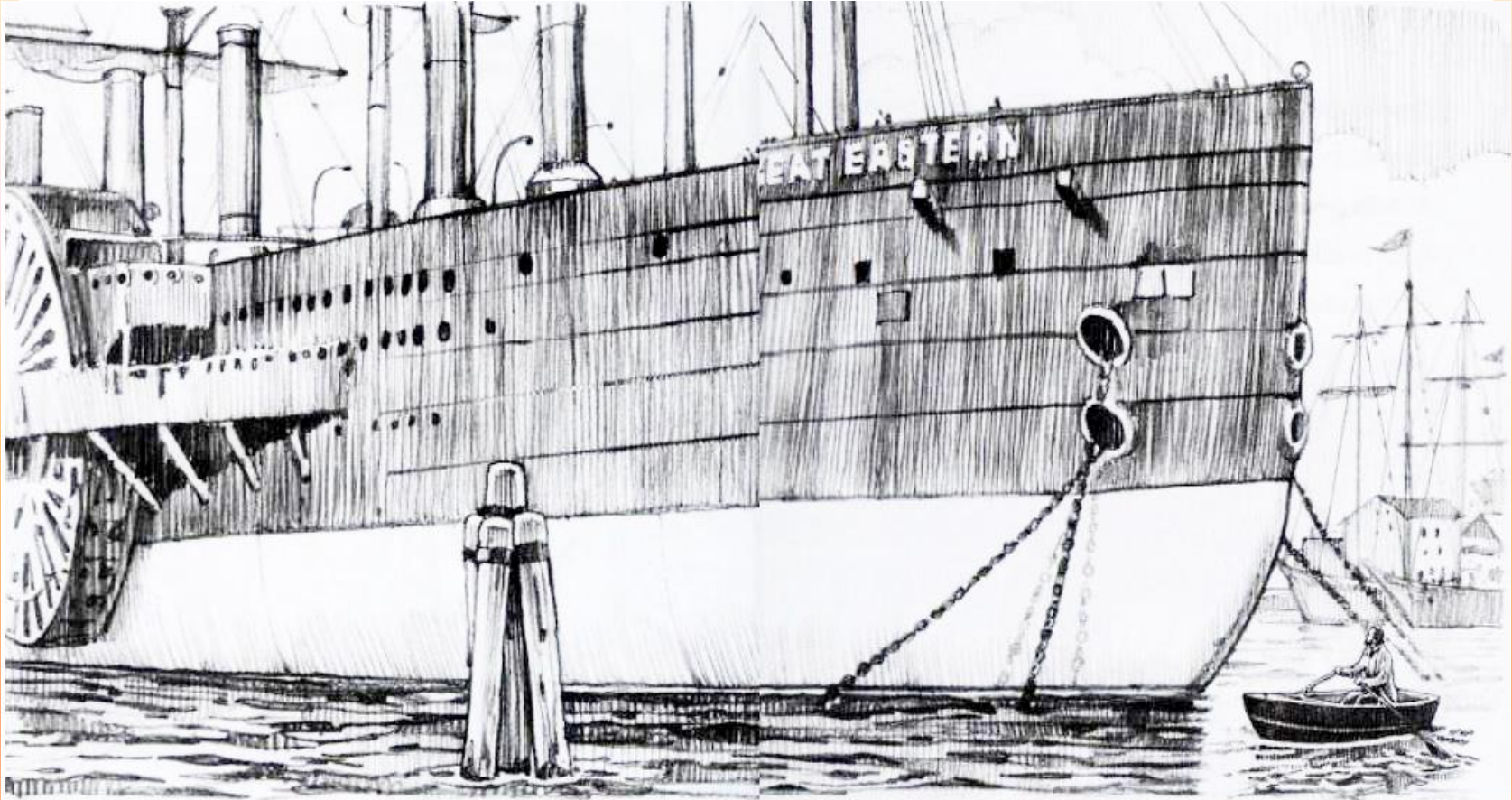
वो और पॉल अमेरिका गए. यह शायद पहली बार था जब जूल्स ने यूरोप छोड़ा था. उन्होंने विशाल "ग्रेट ईस्टर्न" जहाज़ पर अटलांटिक महासागर पार किया. जूल्स जहाज से इतने चकित हुए कि जब वे लंदन में रुके, तो उन्होंने एक छोटी सी नाव में, उसके चारों ओर एक परिक्रमा लगाई, ताकि वो उस विशाल स्टीमर के हर हिस्से को करीबी से देख सकें!

न्यूयॉर्क पहुंचकर वे फिफ्थ एवेन्यू के एक फैंसी होटल में रुके. शहर में लिफ्ट वाला, वो पहला होटल था! फिर भाइयों ने शक्तिशाली नियाग्रा जलप्रपात देखने के लिए हडसन नदी की यात्रा की.

जूल्स अमेरिका से प्यार करते थे. उन्होंने बाद की अपनी कई पुस्तकों में, अमेरिकी पात्रों और अमेरिकी स्थानों को शामिल किया.

जब वे विचारों और टिप्पणियों से भरी अपनी नोटबुक के साथ घर लौटे, तो जूल्स ने पाया कि विज्ञान और उद्योग की दुनिया उनके पास आ गई थी. पेरिस में 1867 लगी यूनिवर्सल एक्सपोसिशन ने भी दुनिया के अजूबों को, उन तक पहुँचाया.

1867 की यूनिवर्सल एक्सपोसिशन

1 अप्रैल से 31 अक्टूबर 1867 तक, फ्रांसीसी सरकार ने पेरिस में एक विशाल मेले की मेजबानी की. इसे "यूनिवर्सल एक्सपोसिशन" कहा गया, और उसमें आधुनिक दुनिया की कुछ नवीनतम वैज्ञानिक और इंजीनियरिंग कृतियों को दिखाया गया. दुनिया भर के देशों द्वारा पचास हजार से अधिक प्रदर्शन - ऊर्जा, बिजली के बिल्कुल नए रूप एक-साथ प्रदर्शित किए गए थे.

Vue Générale de l'Exposition universelle de 1867

प्रदर्शनी का मुख्य आकर्षण मशीनों की गैलरी थी. इसे गुस्ताव एफिल द्वारा डिजाइन किया गया था, जिन्होंने बाद में एफिल टॉवर का डिजाइन और निर्माण किया. गैलरी का आकार एक फुटबॉल मैदान के आकार का था. वहां आने वाले मेहमान पहली यांत्रिक पनडुब्बी और अन्य पानी के नीचे जाने वाले यानों को देख सकते थे.

यूनिवर्सल एक्सपोज़िशन में लगभग डेढ़ करोड़ लोगों ने भाग लिया.

अध्याय 5

कप्तान निमो

समुद्र के प्रति आजीवन प्रेम ने जूल्स को उपन्यास लिखने में मदद की और उसने उन्हें पहले से कहीं अधिक प्रसिद्ध बना दिया. उन्होंने उसे एक विचार बताया "जो उस विषय पर पूरी तरह से फिट बैठता था." जूल्स उन सभी चीजों को जोड़ना चाहते थे, जिनसे उन्हें एक भावनात्मक लगाव था, जिसमें रोटर और फ्लाइंग मशीनें भी शामिल थीं. उन्होंने मशीनरी पर शोध किया और समुद्री यात्राओं के बारे में पढ़ा.

जूल्स अपनी नई पुस्तक के बारे में इतने उत्साहित थे कि उन्होंने हेट्ज़ेल को लिखा, "अगर मैं इस पुस्तक को नहीं ख़त्म करता हूँ, तो मुझे बहुत दुःख होगा." यानि वो बात उन्हें इतना दुखी करेगी कि फिर उन्हें बेहतर महसूस कराने का कोई और उपाय नहीं होगा.

"टवेंटी थाउजेंड लीग्स अंडर द सी", में कैप्टन निमो की कहानी सुनाई गई है, जो एक रहस्यमयी व्यक्ति हैं और जो शक्तिशाली पनडुब्बी "नॉटिलस" की कमान संभाले थे.
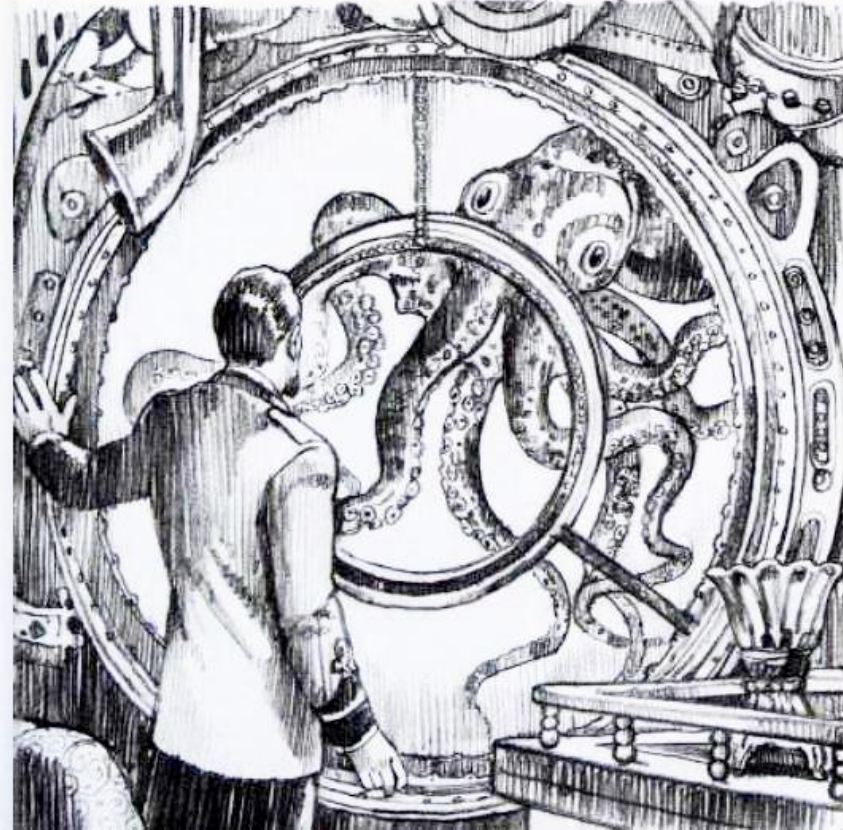
पुस्तक का शीर्षक "बीस हजार लीग" यात्रा की गई दूरी (लगभग साठ हजार मील) को संदर्भित करता है, न कि उस गहराई को, जिसमें पनडुब्बी डूबी थी. (एक लीग लगभग तीन मील का एक पुराना माप है. "लीग" मूल रूप से उस दूरी को इंगित करता है जो कोई व्यक्ति एक घंटे में चल सकता है.)

पेरिस की यूनिवर्सल एक्सपोज़िशन में, नॉटिलस नामक एक वास्तविक पनडुब्बी को प्रदर्शित किया गया था.

कैप्टन निमो की नॉटिलस पर, असली पनडुब्बियों की तरह अंदर से तंग, बदबूदार और अंधेरी नहीं थी. इसकी बजाय, जूल्स वर्न की नॉटिलस में यात्रियों के लिए बड़े-बड़े बेडरूम थे. एक जहाज पर ऑर्गन वाद्ययंत्र, मनोरंजन प्रदान करता था. निमो ने यात्रा को चित्रों से भरे एक संग्रहालय से सजाया था जिसमें विशाल सीपियाँ, छोटे कोरल और रंगीन स्टारफिश जैसे प्राकृतिक चमत्कार थे.
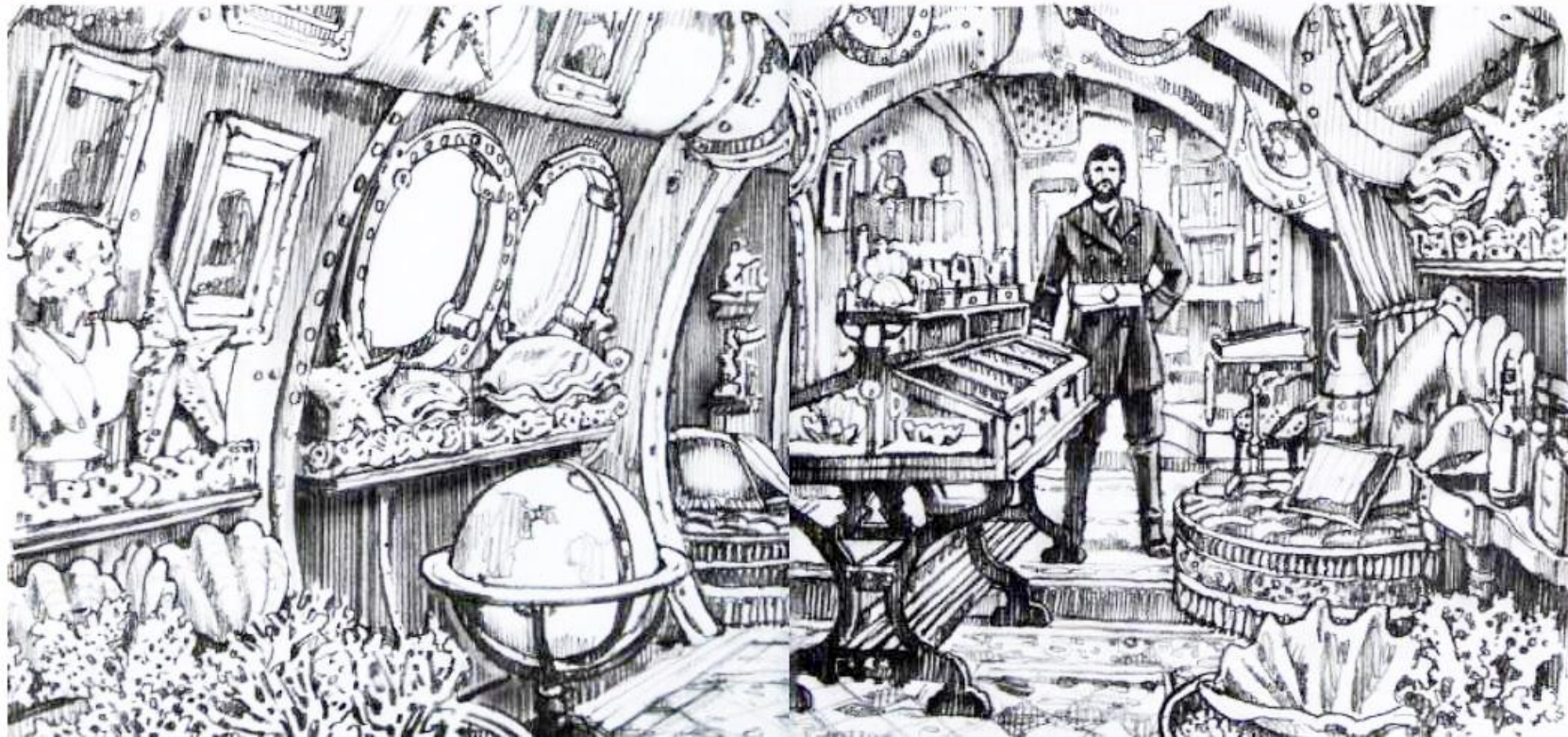
और निमो के पुस्तकालय में बारह हजार पुस्तकें थीं! हर कमरे में बिजली की रोशनी थी और पनडुब्बी को चलाने वाले शक्तिशाली इंजन 220-फीट से अधिक लंबे थे और वे भी बिजली से चलते थे.

तीन यात्रियों को लेकर निमो दुनिया भर में, पानी के भीतर साहसिक रोमांचक यात्रा पर जाता है. वो लोग उत्तरी ध्रुव की बर्फ की टोपी के नीचे यात्रा करते हैं, एक विशाल स्क्विड से लड़ते हैं, रेड-सी में कोरल रीफ्स की खोज करते हैं, और यहां तक कि वे ट्रान्साटलांटिक केबल को भी देखते हैं. एक तूफान के दौरान यात्रियों के भाग जाने के बाद, निमो और नॉटिलस नॉर्वे के तट पर एक विशाल भँवर में गायब हो जाते हैं.

जूल्स को "टवेंटी थाउजेंड लीग्स अंडर द सी" लिखने में लगभग तीन साल लगे. हेट्ज़ेल ने इसे छह महीने के अंतराल में, दो अलग-अलग खंडों में प्रकाशित करने का फैसला किया. कहानी लिखने से पहले जूल्स ने उपन्यास का पहला भाग हेट्ज़ेल को दिया. इससे हेट्ज़ेल, दूसरे भाग को बेहतर बनाने के सुझाव दे सकता था.

अपनी नवीनतम पुस्तक के लिए निरंतर शोध, लेखन और विवरण को ठीक प्रस्तुत करना जूल्स के लिए कठिन हो गया था. जूल्स को अब एक छुट्टी की जरूरत थी. उसने महसूस किया कि वो अंततः एक बड़ा जहाज खरीदने के लिए तैयार थे. उनके पास पहले एक छोटी मछली पकड़ने की नाव थी. उन्होंने बिल्डरों को काम पर रखा और काम शुरू हुआ. "नाव प्रगति कर रही है," उन्होंने 1869 में लिखा. "वो नाव शानदार होगी. मुझे कीलों और तख्तों से प्यार है." जब नाव समाप्त हो गई, तो जूल्स ने अपने छोटे बेटे के नाम पर नाव का नाम "सेंट-मिशेल" रखा.

महाद्वीपों को जोड़ना

1830 के दशक में, अमेरिकी सैमुअल मोर्स ने "टेलीग्राफ" का अविष्कार किया था. टेलीग्राफ के तार एक जगह से दूसरी जगह तक सिग्नल ले जाते थे. "टेलीग्राफ" जमीन पर अच्छा काम करता था. टेलीग्राफ के खम्बे लगाए गए, और उन तारों ने प्रमुख शहरों और कस्बों को एक-साथ जोड़ा. लेकिन क्या महाद्वीपों के बीच टेलीग्राफ भेजने का कोई तरीका था?

सैमुअल मोर्स

अमेरिका और इंग्लैंड की कंपनियां ऐसा करने के लिए तैयार थीं. 1856 से 1867 तक ट्रान्साटलांटिक केबल बिछाने के कई प्रयास किए गए. यह कठिन काम था क्योंकि अक्सर तार टूट जाते थे.

1866 में, एक शक्तिशाली स्टीमशिप, "ग्रेट ईस्टर्न" द्वारा एक नया केबल समुद्र में बिछाया गया. 27 जुलाई को इस नए ट्रान्साटलांटिक केबल पर पहला संदेश भेजा गया. ट्रान्साटलांटिक केबल का निर्माण, विश्व संचार में एक बड़ा कदम था. उसने संदेशों को हफ्तों के बजाय मिनटों में भेजना संभव बनाया.

संयोग से, जूल्स वर्न ने एक साल बाद 1867 में "ग्रेट ईस्टर्न" पर अटलांटिक महासागर में अपनी एकमात्र यात्रा की. केबल बिछाने का काम खत्म करने के बाद वो "ग्रेट ईस्टर्न" की पहली यात्रा थी.
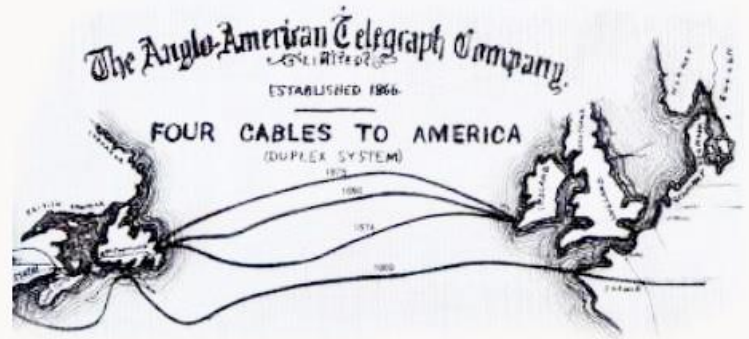
साथ में, वर्न ने फ्रांस के पूर्वोत्तर तट पर अपने ग्रीष्मकालीन घर के आसपास कई दिन-यात्रा के रोमांच में बिताए थे. वो परिवार के साथ समुद्र की दोपहरी के समय में खुशी के दिन थे. 1870 तक, वर्न पेरिस के उत्तर में शहर अमीन्स में लौट आए, जहां उनकी पत्नी होनोरिन बड़ी हुई थी. होनोरिन एक बड़ा घर और अधिक जगह चाहती थीं, जो उन्हें पेरिस में कभी नहीं मिल सकती थी. जूल्स के लेखन की सफलता के कारण उनका परिवार एक शानदार जीवन जी सकता था.
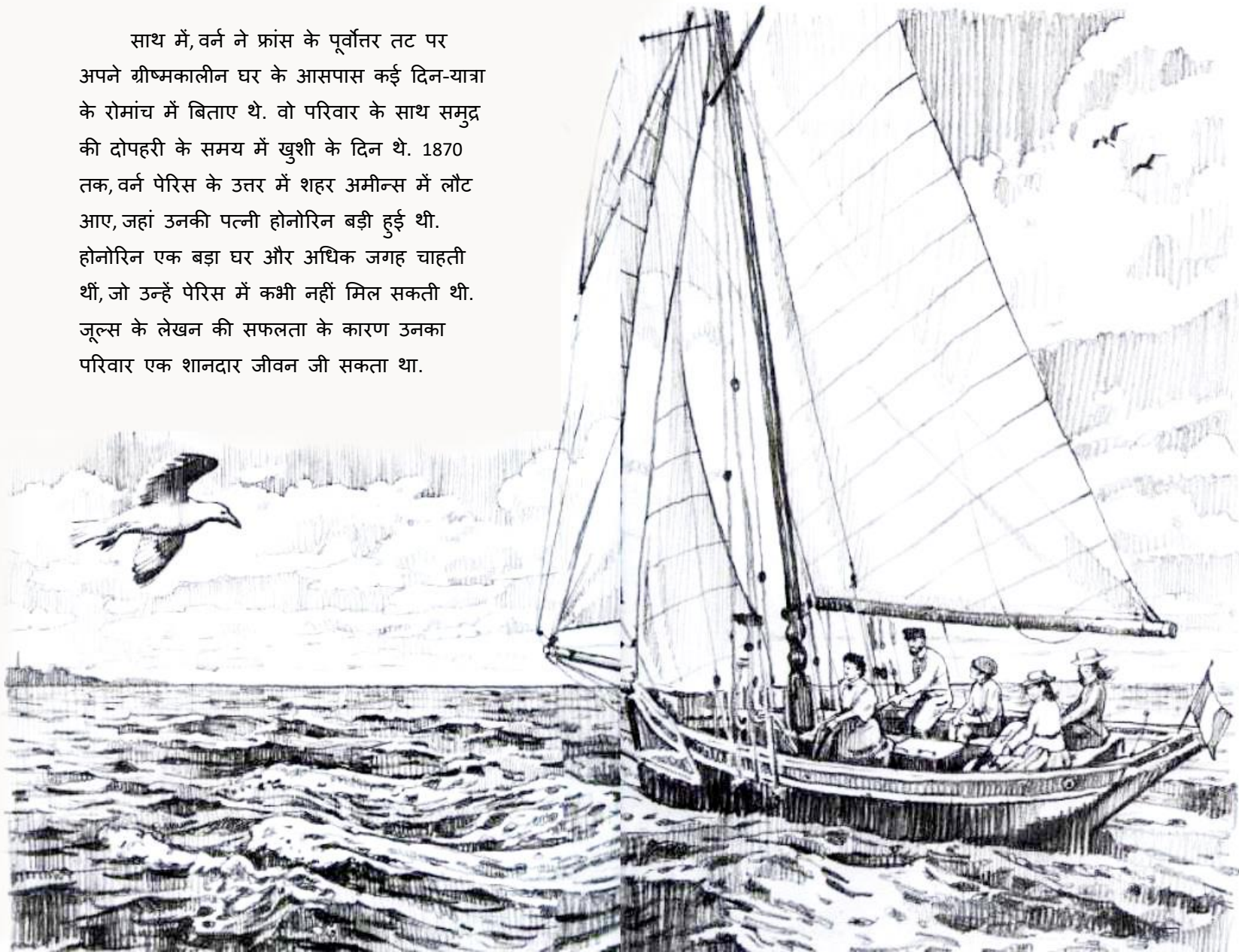
अध्याय 6

एक युद्ध और एक गुब्बारा

अगस्त 1870 में, जूल्स, नेशनल ऑर्डर ऑफ द लीजन ऑफ ऑनर, फ्रांस का सर्वोच्च पुरस्कार प्राप्त करने, के लिए पेरिस गए. वो अब फ्रांस के सबसे लोकप्रिय लेखक थे.

जूल्स और उनके परिवार का जीवन बहुत अच्छी तरह चल रहा था, लेकिन वो सब 1870 के अंत में बदल गया. फ्रांस और प्रशिया के बीच युद्ध छिड़ गया. शत्रु सेना ने फ्रांस पर आक्रमण किया और पेरिस पर कब्जा कर लिया.

जूल्स, सैनिक बनने के लिए बहुत बूढ़े थे, लेकिन सरकार ने उन्हें फिर भी काम दिया. उन्होंने जूल्स को, उनकी सेंट-मिशेल नाव को, गश्ती नाव के रूप में इस्तेमाल करने का आदेश दिया. वो हफ्तों तक फ्रांसीसी तट के ऊपर-नीचे घूमते रहे. चालक दल ने कभी भी दुश्मन के जहाजों को नहीं देखा, और जूल्स ने अपना अधिकांश समय अपने गश्ती लेखन पर बिताया.

फ्रेंको-प्रुशियन युद्ध

1870 में, प्रशिया, यूरोप के केंद्र में कई स्वतंत्र राज्यों में से एक था. इसके नेता ओटो वॉन बिस्मार्क थे. वो उन राज्यों को एक राष्ट्र, जर्मनी में एकीकृत करना चाहते थे. फ्रांस इस योजना से खुश नहीं था. उसे अपने देश को खतरा महसूस हुआ. 1870 की गर्मियों में इस बात को लेकर दोनों देशों में युद्ध छिड़ गया. प्रशिया और अन्य जर्मन राज्यों की सेनाएँ बहुत शक्तिशाली साबित हुईं. फ्रांस ने लगभग एक साल तक लड़ाई लड़ी, लेकिन 1871 में आत्मसमर्पण करना पड़ा. प्रिंस ओटो, एक नए संयुक्त जर्मन साम्राज्य के चांसलर बने. फ्रांस एक अलग देश बना रहा.
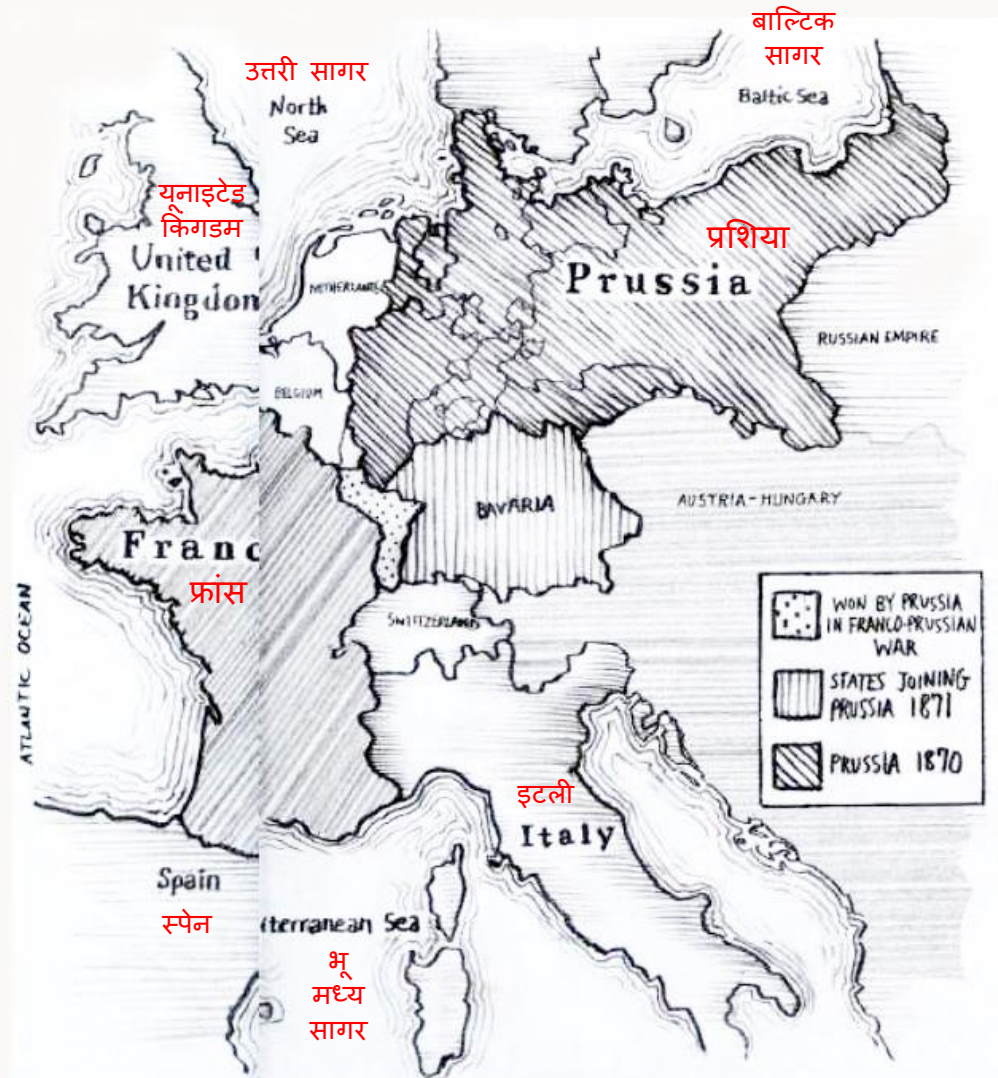
जब जूल्स अंततः अपने प्रकाशकों को पांडुलिपियां देने के लिए पेरिस वापस गए, तो उन्होंने कार्यालय को बंद पाया. गलियों में लड़ाई ने, व्यापार करना असंभव बना दिया था. जूल्स के पास कोई आय का साधन नहीं था और उन्हें पेरिस में रहने के लिए मजबूर होना पड़ा.

युद्ध ने सभी के लिए जीवन कठिन बना दिया था, यहां तक कि फ्रांस के सबसे प्रसिद्ध लेखक के लिए भी. कुछ समय के लिए वो पैसा कमाने के लिए फिर से क्लर्क बन गए. 1871 की गर्मियों में युद्ध की परेशानी समाप्त हो गई, लेकिन नवंबर में पियरे वर्न की मृत्यु हो गई. तब तक, जूल्स के पिता अपने बेटों के काम के एक बड़े समर्थक बन गए थे और उन्होंने जो कुछ भी हासिल किया था, उन्हें उस पर गर्व था.

1871 के अंत तक जूल्स, पेरिस में, पूरे समय काम कर रहे थे, लेकिन उनकी पत्नी और बच्चे अभी भी अमीन्स में रह रहे थे. अंततः 1871 की शुरुआत में हेट्ज़ेल ने जूल्स को फिर से भुगतान करना शुरू कर दिया. इसके तुरंत बाद, जूल्स ने उस पुस्तक को समाप्त किया जो उसकी पैसे की चिंताओं को हमेशा के लिए समाप्त कर देगी.

"अराउंड थे वर्ल्ड इन एट्टी डेज" 1872 की गर्मियों में प्रकाशित हुई.

किताब में, अंग्रेज फिलैस फॉग ने अस्सी दिनों में पूरी दुनिया की यात्रा करने के लिए एक शर्त स्वीकार की. आज, वो यात्रा कुछ ही दिनों में पूरी की जा सकती हैं लेकिन 1872 में, कई देशों में रेलमार्ग तक नहीं थे, और निश्चित रूप से, कारों और हवाई जहाजों का तब तक आविष्कार ही नहीं हुआ था.

फिलैस फॉग कई देशों की तेज़ी से यात्रा करता है, एक ब्रिटिश जासूस गलती से, उसे एक बैंक लुटेरा मानकर उसका पीछा करता है. फिलैस के साथ एक फ्रांसीसी नौकर, पाससेपार्टआउट जुड़ जाता है, जिसके रचनात्मकता और जिम्नास्टिक कौशल उन्हें कई खतरनाक स्थितियों से बचाते हैं. रास्ते में, वे भारत में औदा नाम की एक राजकुमारी को बचाते हैं, और वह और फिलैस उसके प्रेम में पड़ जाता है.

किताब के अंत में एक ट्विस्ट है. तीनों निश्चित रूप से लंदन वापस पहुँचते हैं कि वे एक दिन देर से पहुँचते हैं. इंग्लैंड की यात्रा के आखिरी चरण में वे अपने जहाज के कुछ हिस्सों को ईंधन के लिए जलाते हैं. लेकिन बाद में वे महसूस करते हैं कि उन्होंने पश्चिम की बजाय पूर्व की यात्रा करके वास्तव में एक अधिक दिन बचाया था. वे अपनी मीटिंग के लिए दौड़ते हैं, जहाँ फॉग शर्त जीत जाता है.

वो पुस्तक जूल्स और हेट्ज़ेल द्वारा प्रकाशित सबसे लोकप्रिय पुस्तक बनी. जैसे ही धारावाहिक का प्रत्येक नया अध्याय अखबार में छपा, कहानी दुनिया भर में भेजी गई, जैसे कि फिलैस फॉग को खूब किया था. कुछ देशों में, पाठकों को यह समझ में नहीं आया कि वो धारावाहिक काल्पनिक थे, और इसलिए उन्होंने स्वयं फिलैस को खोजना शुरू कर दिया.
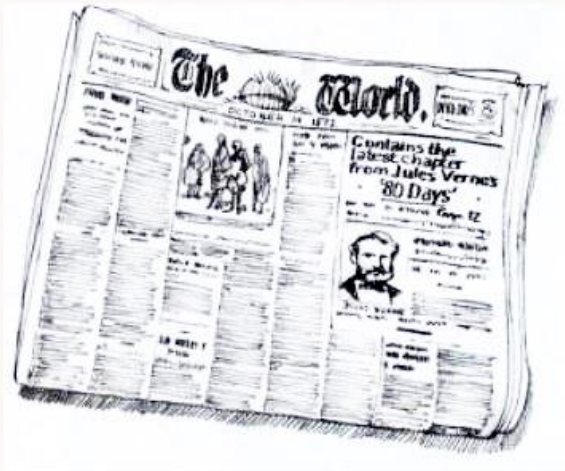
जूल्स को किताब लिखने में मज़ा आया, शायद युद्ध के दुखद दिनों के बाद खुश होने के तरीके के रूप में. "आप कल्पना कर सकते हैं कि अस्सी दिनों में दुनिया भर में अपनी यात्रा के बाद मैं कितना खुश हूं," उन्होंने हेट्ज़ेल को लिखा. "मैं इसके बारे में सपना देखता हूं! आशा करते हैं कि हमारे पाठक भी उसी तरह से खुश होंगे."

पुस्तक को एक मंचीय नाटक में बदला गया - जिसे भी जूल्स ने ही लिखा. लेखक के रूप में, उन्होंने किताब की अपेक्षा, नाटक से कहीं अधिक पैसा कमाया, जो उनके परिवार के लिए एक आरामदायक जीवन सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त था.

नेल्ली बेली

1889 में, एक अमेरिकी पत्रकार "अराउंड थे वर्ल्ड इन एट्टी डेज" से प्रेरित हुईं. वो केवल अस्सी दिनों में दुनिया भर में यात्रा करके वास्तव में स्टंट को दोहराने की कोशिश करना चाहती थी.

एलिज़ाबेथ कोचरन (1864-1922), जिन्होंने नेल्ली बेली नाम से लिखा, को यात्रा पूरी करने में केवल बहत्तर दिन लगे. रास्ते में, उस ग्राउंड ब्रेकिंग रिपोर्टर ने ट्रेन, स्टीमशिप और घोड़े की पीठ से यात्रा की. हर पड़ाव पर, वो न्यूयॉर्क-वर्ल्ड में, अपने संपादक को, अपनी यात्रा की कहानियाँ सुनाती थीं. अमेरिका भर के अखबारों के पाठकों ने उनके हर कदम का अनुसरण किया क्योंकि उसने फिलैस फॉग के काल्पनिक रिकॉर्ड को हराया था.

अपनी यात्रा की शुरुआत में, उसने एक त्वरित चक्कर लगाया. वो महान लेखक जूल्स वर्न के साथ यात्रा करने के लिए अमीन्स, फ्रांस गई, जिनकी कहानी ने उनके 24,899 मील के साहसिक कार्य को जन्म दिया था.

अध्याय 7

साहसिक कार्य का अंत

"अराउंड थे वर्ल्ड इन एट्टी डेज" की सफलता के बाद के वर्ष जूल्स और उनके परिवार के लिए रोमांच से भरे थे. जूल्स अपने चालीसवें दशक के मध्य में थे. उसके पास काफी पैसा था. जूल्स ने 1876 में एक नया, बड़ा याच, सेंट-मिशेल II बनाने का फैसला किया, और फिर अगले वर्ष एक और भी बड़ा, सेंट-मिशेल III खरीदा. उन्होंने और होनोरिन ने अमीन्स में एक भव्य घर बनाया. जूल्स ने घर की पांचवीं मंजिल पर अपने ऑफिस में कई घंटे बिताए, और शहर को निहारा.

इस समय तक मिशेल एक ऐसे युवक बन चुका था जो अक्सर परेशानी में रहता था. वह स्कूल में नहीं पढ़ा था और कोई स्थिर नौकरी भी नहीं रख पाया था. जूल्स को अपने बेटे का कर्ज चुकाना पड़ा. कई सालों तक, जूल्स ने मिशेल की मदद करने के लिए संघर्ष किया.

अमीन्स में जूल्स वर्न का घर

1884 में, जूल्स और पॉल ने स्पेन के दक्षिणी सिरे पर जिब्राल्टर का दौरा किया और प्रसिद्ध बार्बरी वानर - यूरोप में रहने वाले एकमात्र जंगली बंदरों को देखा.

फिर दोनों भाई, भूमध्य सागर के पार मोरक्को और ट्यूनीशिया गए, जो उत्तरी-अफ्रीका के कुछ हिस्से थे जो उस समय फ्रांसीसी उपनिवेश थे. इटली और ग्रीस में अपनी यात्रा के दूसरे भाग में होनोरिन भी उनके साथ शामिल हुईं.

वे जहां भी गए, जूल्स का एक सेलिब्रिटी के रूप में स्वागत किया गया. रोम में, जूल्स और होनोरिन की पोप लियो XIII के साथ एक विशेष बैठक हुई. वेनिस में, जूल्स को आतिशबाजी के साथ सलामी दी गई और उनका नाम एक होटल में बल्बों की रोशनी द्वारा बिखेरा गया.

जूल्स ने लिखना जारी रखा, अगले बीस वर्षों तक वो हर साल कम-से-कम दो उपन्यास लिखते रहे.

सभी "असाधारण यात्रा" का हिस्सा थे जिन्हें हेट्ज़ेल ने प्रकाशित किया. इनमें "द जाइंट राफ्ट", "द ग्रीन रे" और "क्लिपर ऑफ द क्लाउड्स" शामिल थे.

जब वे नहीं लिख रहे होते, तब जूल्स अमीन्स शहर के सामजिक जीवन में भाग लेते थे. वो और होनोरिन अपने दोस्तों और पड़ोसियों के लिए पार्टियां आयोजित करते थे.

एक बार उन्होंने लोगों से उनकी एक किताब के पात्रों के कपड़े पहनने को कहा. दूसरी बार उन्होंने सभी मेहमानों की सेवा करने का नाटक करते हुए, रेस्तरां के मालिक के कपड़े पहने.

1886 में, जूल्स को उनके भतीजे पॉल के बेटे गैस्टन ने पैर में गोली मार दी थी. वह बुरी तरह घायल हो गए और असल में वो गोली उनके पैर में जीवन भर धंसी रही.

शूटिंग के ठीक एक हफ्ते बाद, जब जूल्स अभी भी बहुत दर्द में थे, तब उन्हें एक बहुत ही दुखद खबर मिली. उनके लंबे समय तक प्रकाशक और दोस्त, पियरे-जूल्स हेट्ज़ेल की मृत्यु हो गई थी.

जूल्स ने कई महीनों तक अपना पैर बिस्तर पर या कुर्सी पर ही रखा. आखिरकार, वो चलने में सक्षम हुए, हालांकि एक बेंत के साथ. व्यस्त रहने के लिए, जूल्स ने चुनावों में भाग लिया और अमीन्स की नगर परिषद की सीट जीती.

उन्होंने यह सुनिश्चित करने के लिए काम किया कि शहर के गरीब लोगों की देखभाल की जाए. उन्होंने शहर में एक स्थायी सर्कस स्थापित करने में भी मदद की.

1888 में, जूल्स ने अपनी एकमात्र बच्चों की किताब लिखी. "टू इयर्स हॉलिडे", बच्चों का एक समूह जहाज ध्वस्त होने के बाद एक द्वीप पर चला जाता है. वे भयंकर जानवरों और समुद्री लुटेरों से लड़ते हैं. वे एक पतंग बनाते हैं ताकि वे बचाव जहाजों की तलाश कर सकें. अंत में, उन सभी को द्वीप से हटाकर ऑस्ट्रेलिया ले जाय जाता है.

कैस्टअवे किड्स

जब जूल्स वर्न ने अपनी अधिकांश असाधारण यात्राएँ लिखीं, तो उनका उद्देश्य सभी उम्र के लोगों को आकर्षित करना था. वे मूल रूप से जिस पत्रिका में छपे थे, वो वयस्कों और बच्चों दोनों के लिए थी. वर्षों से, उनकी कहानियों के अंग्रेजी अनुवादों में अक्सर ऐसे बदलाव होते रहे जिससे बच्चों के लिए पढ़ना और आनंद लेना और आसान हो गया.

वर्न की पुस्तक "टू इयर्स हॉलिडे" विशेष रूप से बच्चों के लिए लिखी गई थी. इसमें स्कूली बच्चों के एक समूह की कहानी बताई गई है जो न्यूजीलैंड के तट पर जहाज के टूटने से फंस गए और फिर वे "चेयरमैन आइलैंड" पर उन्होंने जीवित रहने के लिए कैसे संघर्ष किया.
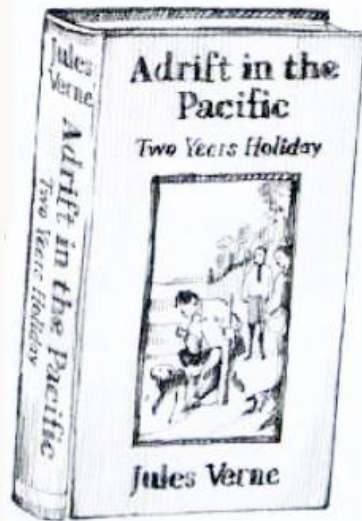
पुस्तक के एक युवा पाठक विलियम गोल्डिंग थे - गोल्डिंग, जूल्स वर्न की साहसिक कहानियों को पढ़कर बड़े हुए थे. वो शुरू में एक स्कूली शिक्षक और बाद में खुद एक लेखक बने. 1954 में, उन्होंने "लॉर्ड ऑफ द फ्लाईज़" प्रकाशित की. वर्न की किताब की तरह, वो कहानी भी द्वीप पर स्थापित थी और उसमें भी जहाज के टूटने से बचे लड़कों के एक समूह के संघर्ष की कहानी को बताया गया था. "लॉर्ड ऑफ द फ्लाईज़" दुनिया में युवाओं के लिए सबसे अधिक पढ़ी जाने वाली किताबों में से एक बन गई.

1897 में, जूल्स अपनी शुरुआती प्रणेता में से एक, एडगर एलन पो पर वापिस लौटे. अमेरिकी लेखक ने एक उपन्यास लिखा था. जूल्स को लगा कि उस उपन्यास को आगे जारी रखा जा सकता था. इसलिए, जूल्स ने एडगर एलन पो के उपन्यास का अगला हिस्सा लिखा. जूल्स ने अन्य पुस्तकें लिखीं जो ग्रीस, स्कॉटलैंड, चीन, कनाडा, अंटार्कटिक और अमेज़ॅन नदी के किनारे स्थापित की गई थीं. रोमांच और अन्वेषण का उनका प्यार कभी फीका नहीं पड़ा.

जूल्स अपने सत्तर के दशक में थे और अब विश्व प्रसिद्ध थे. अमेरिका और इंग्लैंड के लेखक अमीन्स में, उनके घर का दौरा करने आते थे. एक साक्षात्कार में, उन्होंने अपनी लेखन आदतों का वर्णन किया.

उन्होंने कहा कि उन्होंने "वो पेंसिल से पहले रफ कॉपी लिखते थे, और उसमें सुधार के लिए आधे पेज का मार्जिन छोड़ते थे." फिर वो उसे स्याही में फिर से लिखते थे, और अक्सर कई बार खंड बदलते थे.

1880 के दशक तक टाइपराइटर आम हो गया था. पर उन्होंने टाइपराइटर का उपयोग करने से इनकार किया. अंत में, पांडुलिपियों के उनके प्रकाशक के पास जाने के बाद और पृष्ठों (जिसे प्रूफ कहा जाता है) में सेट किया जाता था. उसमें उन्होंने और भी अधिक सुधार किए. "मैं मानता हूं कि मेरा वास्तविक श्रम मेरे पहले प्रूफ के साथ शुरू होता है, क्योंकि मैं न केवल हर वाक्य में कुछ सही करता हूं, बल्कि पूरे अध्यायों को फिर से लिखता हूं."

इस समय तक, जूल्स एक बार फिर मिशेल के करीब हो गए. उसके बेटे ने आखिरकार शादी कर ली थी और अब वो खुद भी लिखने लगा था.
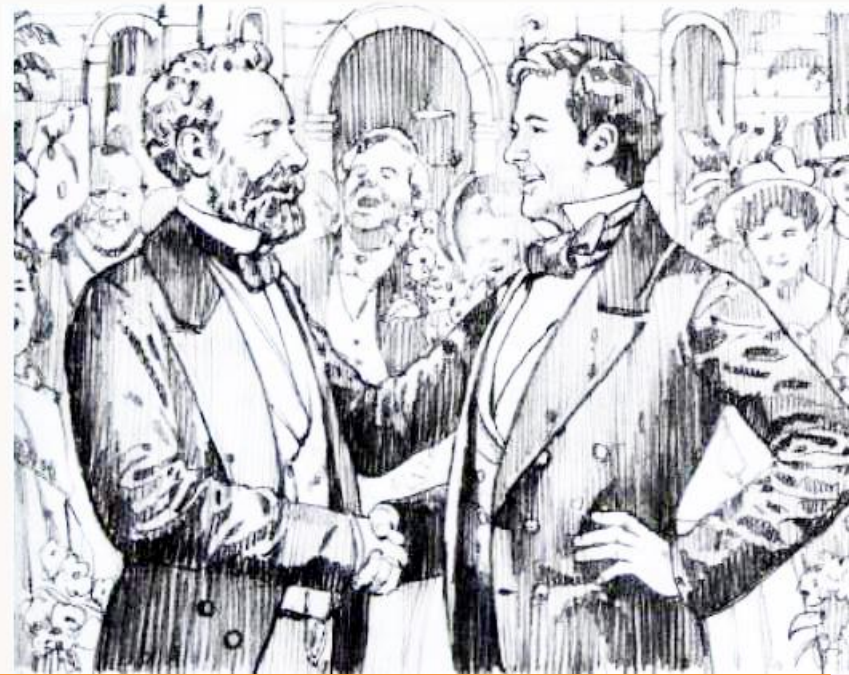
बीसवीं सदी के शुरू होते ही जूल्स ने खुद लिखते रहने की कोशिश की. उनका घायल पैर उन्हें अभी भी परेशान करता था, और उनकी आँखों की रोशनी भी कम होने लगी थी.

जीवन भर हाथ से लिखने से अब उनके हाथ दुखने लगे थे. जब वे सततर 77 वर्ष के थे, तब उन्हें दौरा पड़ा और फिर वे कभी ठीक नहीं हुए. 24 मार्च, 1905 को उनकी मृत्यु के साथ जूल्स वर्न का महान साहसिक कार्य समाप्त हो गया.

अध्याय 8

एक प्रेरक जीवन

जूल्स वर्न की मृत्यु के एक दशक बाद तक, मिशेल वर्न ने, अपने पिता के काम को प्रकाशित करना जारी रखा. जूल्स ने अपने मृत्यु से पहले ही कुछ कहानियाँ को ख़त्म किया था. कुछ को मिशेल ने बाद मे पूरा किया.

यह बात कई वर्षों बाद ही पता चली. पाठकों को यह नहीं पता नहीं था कि जूल्स वर्न द्वारा "लिखित" अंतिम पुस्तकें दोनों पिता और पुत्र ने, एक साथ मिलकर लिखी थीं.

अपने जीवनकाल में, जूल्स वर्न ने सैकड़ों उपन्यास, नाटक, कविताएँ और पत्रिकाओं के लिए लेख लिखे और प्रकाशित किए. तब से उनकी पुस्तकों के कई नए संस्करण प्रकाशित हुए हैं. अंत में उनके उपन्यासों का 140 से अधिक भाषाओं में अनुवाद हुआ. कुछ विशेषज्ञों के अनुसार वो अब तक के सबसे अधिक अनुवादित लेखक हैं.

रे ब्रैडबरी

महान विज्ञान-कथा लेखक रे ब्रैडबरी ने कहा, "हम सभी, किसी न किसी रूप में जूल्स वर्न के बच्चे हैं." जूल्स की मृत्यु के बाद से, कई लेखकों ने प्रेरणा के रूप में नवीनतम वैज्ञानिक खोजों और सिद्धांतों का उपयोग करके, पाठकों को आकाशगंगा और ब्रह्मांड के सुदूर कोनों में, और काल्पनिक भविष्य में ले गए.

जूल्स ने अपने लेखन को केवल साहसिक कहानियों के रूप में सोचा, लेकिन क्योंकि उन्होंने अपने काम को वैज्ञानिक तथ्य पर आधारित किया, इसलिए उन्हें अक्सर "विज्ञान कथा का पितामह" कहा जाता है.

उनकी कई कहानियों को फिल्मों, टीवी-शो और कॉमिक किताबों में परिवर्तित किया गया है. "टवेंटी थाउज़ेंड लीग्स अंडर द सी" पर आधारित पहली बार 1916 में एक फिल्म बनाई गई थी. वो फिल्म उद्योग के शुरुआत का काल था.

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि हॉलीवुड ने प्रेरणा के लिए, जूल्स वर्न की प्रसिद्ध कहानियों की ओर रुख किया. "टवेंटी थाउज़ेंड लीग्स अंडर द सी" का 1954 का रंगीन संस्करण और भी अधिक लोकप्रिय साबित हुआ. "अराउंड द वर्ल्ड इन एट्टी डेज," का 1956 में बना फिल्म संस्करण एक बड़ा हिट हुआ और उसने सर्वश्रेष्ठ फिल्म के लिए अकादमी पुरस्कार जीता. 2004 में जैकी चैन ने, पासेपार्टआउट के रोल का अभिनय किया था.

जैकी चैन

दुनिया भर के साहसी और खोजकर्ता लोग, जूल्स और उनके काम से प्रेरित थे. उन्होंने उनकी कहानियों से विचार लिए और उन्हें सच करने का साहस किया. एडमिरल रिचर्ड बर्ड ने 1926 में उत्तरी-ध्रुव पर एक हवाई जहाज उड़ाया और कहा, "जूल्स वर्न ने मेरा मार्गदर्शन किया है."

विलियम बीबे जैसे पनडुब्बी के अग्रदूतों ने कैप्टन निमो को, अपनी प्रेरणा बताया. रॉकेट वैज्ञानिक वर्नर वॉन ब्रौन और रॉबर्ट गोडार्ड ने जूल्स की किताबें तब पढ़ीं जब वे बच्चे थे. प्रसिद्ध खगोलशास्त्री एडवर्ड हबल, जूल्स वर्न के बड़े प्रशंसक थे. और चंद्रमा के सबसे दूर एक चट्टान को "जूल्स वर्न क्रेटर" नाम दिया गया है.

उनकी मृत्यु के लगभग नब्बे साल बाद, जूल्स की एक और किताब प्रकाशित हुई. उन्होंने इसे अपने लेखन करियर की शुरुआत में ही 1863 में लिखा था. पियरे-जूल्स हेट्ज़ेल ने उसे प्रकाशित करने से इनकार कर दिया था, इसलिए जूल्स वर्न ने उसे उठाकर एक ओर दिया था. वो किताब "पेरिस इन थे ट्वेंटिएथ सेंचुरी" 1994 में एक बेस्टसेलर बनी.

पुस्तक में, जूल्स ने आगे देखा कि भविष्य में उनका प्रिय शहर पेरिस कैसा हो सकता था. आश्चर्यजनक रूप से, उन्होंने भविष्यवाणी की कि कारों का हमारे समाज पर क्या प्रभाव पड़ेगा, लिफ्टों का व्यापक उपयोग, फैक्स मशीनों का आविष्कार, और रेलगाड़ियाँ जो चुम्बक पर चलेंगी.

अपने पूरे जीवन भर, जूल्स वर्न ने क्षितिज की ओर देखा, पहले एक बच्चे के रूप में नौकायन करके, और बाद में एक लेखक के रूप में. जैसा कि उन्होंने लिखा, उन्होंने उन सभी अद्भुत संभावनाओं की कल्पना की जो भविष्य में हो सकती थीं, और उन्होंने अपनी असाधारण यात्रा के दौरान उन्हें लिखकर सच करने की पूरी कोशिश की.

जूल्स वर्न के जीवन की समयरेखा

1828 जूल्स वर्न का जन्म 28 फरवरी को नैनटेस, फ्रांस में हुआ

1848 साल भर रहने के लिए पेरिस चले गए

1850 पहला नाटक "ब्रोकन स्ट्रॉ" देखा

1852 लिरिक थियेटर में सचिव के रूप में काम किया

1857 ने होनोरिन मोरेल से शादी की, पहली बार समुद्र में यूनाइटेड किंगडम की यात्रा की

1861 बेटे मिशेल का जन्म

1863 "फाइव वीक्स इन ए बैलून" पहला उपन्यास प्रकाशित

1864 "जर्नी टू द सेंटर ऑफ़ द अर्थ" प्रकाशित

1865 "फ्रॉम अर्थ तो मून" प्रकाशित

1869 "टवेंटी थाउजेंड लीग्स अंडर द सी" का लेखन समाप्त

1870 फ्रेंको-प्रुशियन युद्ध में एक जहाज कप्तान के रूप में सेवा की

फ्रेंच लीजन ऑफ ऑनर के लिए नामित

1872 "अराउंड द वर्ल्ड इन एट्टी डेज," प्रकाशित

1886 भतीजे गैस्टन ने उनके पैर में गोली मार दी

1888 अमीन्स, फ्रांस की नगर परिषद के लिए चुने गए

1905 मार्च 24,1905 को अमीन्स, फ्रांस में मृत्यु

1994 अंतिम उपन्यास "पेरिस इन ट्वेंटीथ सेंचुरी" प्रकाशित हुआ

विश्व हजार लोगों की समयरेखा

1825 निकोलस प्रथम रूस का राजा बना

इंग्लैंड में पहली रेलवे खुली

1848 - फ्रांस में एक क्रांति ने राजा लुई-फिलिप को अपदस्थ किया

1853 - रूस और इंग्लैंड ने क्रीमियन युद्ध की लड़ाई शुरू

1859 - चार्ल्स डार्विन की क्रांतिकारी जीव विज्ञान पुस्तक "ऑन द ओरिजिन ऑफ स्पीशीज़" प्रकाशित

1861 - अमेरिकी गृहयुद्ध शुरू हुआ और 1865 तक चला

1863 - पहला संगठित फुटबॉल समूह, फुटबॉल एसोसिएशन, इंग्लैंड में बना

1869 - भूमध्यसागरीय और लाल सागर को जोड़ने वाली स्वेज नहर खुली

1871 - फ्रेंको प्रशिया युद्ध के बाद एक संयुक्त जर्मनी की स्थापना हुई

1876 - अलेक्जेंडर ग्राहम बेल ने टेलीफोन का आविष्कार किया

1883 - इंडोनेशिया के ज्वालामुखी द्वीप क्राकाटोआ में विस्फोट हुआ जिसमें 36,000 लोग मारे गए

1885 - जर्मनी के कार्ल बेंज ने तीन पहियों वाली गाड़ी में एक गैसोलीन इंजन लगाया, जिसे कुछ लोगों ने पहली ऑटोमोबाइल कहा

1886 - न्यू यॉर्क हार्बर में स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी का अनावरण किया गया, जो फ्रांस से अमेरिका को एक उपहार था

1901 - इतालवी आविष्कारक गुग्लिल्मो मार्कोनी ने अटलांटिक महासागर के पार पहला रेडियो संदेश भेजा

1903 - विल्बर और ऑरविल राइट ने पहली बार हवाई जहाज को सफलतापूर्वक उड़ाया